सत्र 2020-21

अनुभवमणि

शिवाजी कॉलेज

(हिंदी विभाग)

ई-पत्रिका

sahityasangam

संपादकीय

संपादक

शुभम सिंह
काजल

संपादक मंडल

शिवम
चंदन पाल
राहुल
शाश्वत मिश्र
ऋग्वेद पांडे

दो शब्द

हर एक नई शुरुआत के साथ ही मन में उसे लेकर हज़ारों उमंगे और तरंगे होती हैं । मन में एक छवि सी बनने लगती है; इस नई मंज़िल को लेकर हमने बेशक पहले कभी इसके प्रत्यक्ष दर्शन तक भी न किये हो, फिर भी उसकी कल्पना मात्र से हम उससे खुद को भी जोड़ने लगते हैं । ऐसा ही कुछ होता है स्कूल से कॉलेज तक का सफ़र !

विद्यालय और महाविद्यालय के विद्यार्थी जीवन में बहुत अंतर होता है, इसलिए जब एक सफल, सभ्य, सुखद,सार्थक भविष्य रूपी भवन निर्माण की नींव (स्कूल) पड़ जाने के बाद उसके और सुंदर निर्माण, साज सज्जा हेतु कॉलेज रूपी कॉन्ट्रैक्टर के पास जाते हैं जहां व्यापक और विविध रूप के सर्वश्रेष्ठ पदार्थो को दिया जाता है; विशेष तौर पर **अनुभव, ज़िम्मेदारी एवं जवाबदेही** के रूप में।जब स्कूल के विद्यार्थी जीवन' जिसमें अनुशासन का महत्व सर्वोपरि और अनिवार्य है; से निकल कर कॉलेज के जीवन में प्रवेश लेते हैं , जिसकी एक साधारण छवि सभी के मन में होती है **फिल्मी जीवन वाले कॉलेज की छवि** तो हम भी वही छवि अपने मन में बैठाकर पूरी की पूरी एक कल्पनातीत रूप - रेखा तैयार कर लेते हैं । खासकर पहले दिन कॉलेज में धमाकेदार एंट्री का और सीनियर्स द्वारा फ्रेशर की रैगिंग की रूपरेखा। फिर भी हम ये सोचकर ही बहुत खुश होते हैं कि यहां स्कूल जैसे सख्त नियम और अनुशासन का पालन नहीं करना होगा और यहां हम ही अपने मालिक होंगे।

असल जिंदगी , फिल्मी ज़िन्दगी से और असल कॉलेज और खासकर पहला दिन भी उस फिल्मी और कल्पनातीत जीवन से बिल्कुल अलग होता है। हां, ये बात और हो सकती है कि जो भी कल्पनातीत है और जो फिल्मी दुनिया में है वो कहीं न कहीं तो है, और शायद संभवतः कभी यथार्थ भी हो।

अब यथार्थ और कल्पना जो भी हो, मगर एक सच्चाई ये भी है कि हमारी ये पत्रिका और इसके लेख आपको कहीं न कहीं खुद से जरूर जोड़ेंगे और आप भी उससे खुद को जुड़ा महसूस जरूर करेंगे। एक सत्य यह भी है कि हम विद्यार्थी तो तब भी थे और अब भी है और ताउम्र रहेंगे । तब तक जब तक हम

अनौपचारिक ही सही मगर कहीं न कहीं से कुछ न कुछ सीख रहे हो। एक सबसे रुचिकर फर्क जो हमने जाना विद्यालय और महाविद्यालय में वह था ज़िम्मेदारी! स्कूल में हम किसी की ज़िम्मेदारी थे और कॉलेज में हम खुद जिम्मेदार होते हैं। ये ज़िम्मेदारी एवं जवाबदेही कहीं न कहीं हमें खुद से मिलती है, हमारी क्षमता,दक्षता,शक्ति को भी बताती है और हमारे भीतर एक आत्मनिर्भरता,आत्मसम्मान भी जागृत करती हैं। इसी सोच से प्रेरणा लेते हुए और अपनी जागृति दर्ज करानें हेतु हमने एक नई शुरुआत की है अनुभवमणि के रूप में।

इसमें तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों के पिछले इन 3 वर्षों में कैसे अनुभव और यादें रही ; इसकी बयानी स्वयं उन्हीं की ज़ुबानी में हैं। ताकि आने जाने के इस खेल में अपनी उपस्थिति दर्ज करा सके और ना होकर भी सदैव रहें।
इसमें विद्यार्थी जीवन और उनकी आकांक्षाओं, भावनाओं,समस्याओं और समकालीन संदर्भ में इस ऑफलाइन से ऑनलाइन तक के उनके सफ़र,संघर्ष की भी झलक है । साथ ही जीवन के इस संघर्ष के मंथन से उनके व्यक्तित्व में परिवर्तन और एक नव शक्ति, स्वयं की क्षमताओं को जानने की इच्छा उत्पन्न हुई एवं नव ऊर्जा रूपी मणि की प्राप्ति कैसे इन परिस्थितियों से हुई ; इसका संकलन इस पत्रिका में है या यूं कहूं कि इस अनुभवमणि नें ही हमें हमारे इस अनुभव रूपी मणि का बोध कराया।
हमें यह न केवल आशा है बल्कि पूर्ण विश्वास भी है कि हमारी यह एक नई पहल आगे आने वाले समय में भी कायम रहेगी और यह एक परंपरा के रूप में विकसित होगी । जिसमें समयानुसार नए प्रयोग और परिवर्तन की गुंजाइश तो सदैव रहेगी ही साथ ही इसका औचित्य, महत्व, मूल्य और गरिमा भी शाश्वत रहेंगे तथा अपने इन्हीं गुणों के साथ यह नव निर्माण हेतु एक प्रेरणा रूप में चमकती भी रहेगी।

तृतीय वर्ष
हिंदी विभाग
बैच - 2018-2021

समर्पण

आदरणीय सम्मानित
विभागाध्यक्ष डॉ. सर्वेश कुमार दुबे सर
एवं
हिंदी विभाग के समस्त अध्यापकों
जिनसे हमें इस नई परंपरा की नीव रखने की प्रेरणा मिली,
उन्हीं अध्यापकों को सादर सभक्ति समर्पित

तृतीय वर्ष , हिंदी विभाग

अनुक्रम

1. **शहर-दिल्ली। किरदार-मैं और मेरी यादे**	ऋग्वेद पाण्डेय	6.
2. मेरी यादें	खुशबू	11.
3. अनुभव गुलदस्ता	शुभम सिंह	14.
4. अनुभूति	मोनिका	18.
5. कॉलेज के यादगार पल	प्रीती सिंह	20.
6. अनुभव	राहुल	26.
7. मेरा अनुभव	शाश्वत मिश्र	28.
8. मेरा सफर	अनिल	30.
9. अविस्मरणीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	मोहिनी	33.
10. मेरी अभिव्यक्ति	काजल	36.
11. **गंवार**	चंदन पाल	38.
12. **मज़ेदार था यार वो कॉलेज का सफर**	आकाश ठाकुर	43.

शहर-दिल्ली। किरदार-मैं और मेरी यादे | *ऋग्वेद पाण्डेय*

ना कोई पहलू छूट सके
ना ही किसी को ठेस लगे
कुछ ऐसा लिखना चाहता हूं
जिससे हर किसी को खुशी मिले

शहर-दिल्ली। किरदार-मैं और मेरी यादे

सच कहूं तो मुझे समझ नहीं आ रहा कि शुरुआत कहां से करूं, कॉलेज के पहले दिन से जहां मैं खुद के अलावा किसी को नहीं जानता था या फिर कॉलेज तक पहुंचने के सफर के बारे में जहां परिस्थितियां बिल्कुल मेरे दिल और दिमाग दोनों से विपरीत थी। दरअसल मैं ना तो दिल्ली जाना चाहता था और ना ही बी.ए करना चाहता था पर एक छोटी सी ख्वाहिश ने दिल्ली शहर से मुलाकात कराने का काम किया, एक ऐसा शहर जहां हर साल पता नहीं कितने लोग अपने ख्वाबों को पूरा करने आते हैं ,खैर मुझे शिवाजी कॉलेज के बारे में कुछ नहीं पता था। मैं तो किसी दूसरे कॉलेज में दाखिला लेना चाहता था लेकिन किसी वजह से उस कॉलेज में मुझे दाखिला नहीं मिला और बदले में मुझे शिवाजी कॉलेज मिल गया, वो कहते हैं ना कि किस्मत हमें वही ले जाती है जहां जाने की हमें सच में जरूरत होती है शुरुआत में तो थोड़ा अजीब सा लग रहा था कि वह कॉलेज क्यों नहीं मिली पर जैसे जैसे दिन बीतते गए तो मुझे एहसास होने लगा कि कुछ लोग सही कहते हैं जिंदगी में जो होता है अच्छा ही होता है जिन चीजों के लिए हम आज परेशान हो रहे हैं वास्तव में वो परेशानी का कोई कारण ही नहीं होती है बस हम ही उन्हें एक बड़ा मुद्दा बना देते हैं और आगे चलकर वह हमें वकायदा बातें समझ में आती है और तब पता चलता है कि वह चीज परेशान करने लायक थी ही नहीं...!
यह तो रहा मेरे कॉलेज तक पहुंचने का सफर अब बात करते हैं पहले दिन से लेकर अब तक का सफर, यह कोई मसालेदार फिल्म या कोई डरावनी कहानी या फिर रहस्यमई किस्सा नहीं है । बस

एक लड़के के बीस सालो में गुजारे गए सबसे बेहतरीन तीन साल है यह कहना गलत नहीं होगा कि मेरी तरह हर शख्स को अपने कॉलेज के पहले दिन की उत्सुकता एक अलग ही खुशी देती है मन में बहुत से सवाल भी आते हैं कि दोस्त कैसे बनेंगे टीचर्स कैसे होंगे , हमें कॉलेज में अपना व्यवहार कैसे रखना होगा, तो बहुत से सवालों के साथ पहले दिन कॉलेज पहुंचा, समझ तो पहले ही दिन आ गया था कि हमारे जो गुरुजन है वह हमारा ख्याल बहुत ही अच्छी तरीके से रखेंगे खैर धीरे धीरे जैसे-जैसे कॉलेज के दिन बीतते गए वह साबित भी हो गया अगर मैं यह कहूं कि सिर्फ शिवाजी कॉलेज नहीं बल्कि किसी भी कॉलेज का कोई भी विभाग हमारे हिंदी विभाग जैसा नहीं है तो गलत नहीं होगा, क्योंकि यहां पर हमें छात्र की तरह नहीं रखा गया बल्कि उस बच्चे की तरह रखा गया जो दुनिया में अभी-अभी आया है और सबसे अनजान हैं एक पल के लिए भी ऐसा नहीं लगा कि मैं घर से बहुत दूर हूं यहां हमें सिर्फ ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई बल्कि ऐसा रास्ता दिखाया गया जिसका सहारा लेकर हम आसमान को छू सकते हैं।
शुरुआत में कुछ टीचर्स सख्त भी लगे थे पर नारियल बाहर से कितना भी कठोर हो पर अंदर से मुलायम ही होता है उसी तरह हमारे टीचर्स हैं अगर मैं अपने बारे में बताऊं तो मैं थोड़ा उस टाइप का हूं कि जो ज्यादा जल्दी किसी से बातें नहीं करता थोड़ा अलग अलग रहता है थोड़े कम ही दोस्त बनाता है पर वक्त के साथ बदलाव कितना जरूरी है यह मुझे भी औरों की तरह ही कॉलेज में ही पता चला...!
मेरे जितने भी दोस्त हैं सबकी अपनी एक अलग पर्सनालिटी है कोई छोटी-छोटी बातों में सीरियस हो जाता है तो कोई सीरियस ही नहीं रहता, पर एक बात तो है बिना दोस्तों के कॉलेज लाइफ में मजे ही नहीं है तो चाहे एक बनाओ चाहे 10 बनाओ पर दोस्त होने चाहिए तभी कॉलेज के दिन तुम्हें जिंदगी भर याद आएंगे...!कॉलेज से थोड़ी दूर पर एक मंदिर है जहां भंडारा हुआ करता था जब कभी भी हमें मौका मिलता तो हम वहां जरूर जाते थे और कसम से उस खाने का स्वाद ना बेहतरीन फाइव स्टार होटलो से बेहतर था खाते वक्त हम एक दूसरे के फोटो खींच लिया करते थे पता है मुझे ऐसा लगता है ना कि हमारी सबसे अच्छी फोटो वह होती हैं जिन्हें हम कहीं अपलोड नहीं कर सकते...कॉलेज के सी पॉइंट,कैंटीन,ग्राउंड,लाइब्रेरी , हवा महल सिर्फ मेरे नहीं बल्कि धीरे-धीरे आपकी भी जुबानों में भी चढने वाला है अगर सब कुछ बताने लगूं तो शायद लफ्ज़ कम पड़ जाएंगे पर कुछ चीजे बतानी जरूरी है क्योंकि यह बहुत लोगों के साथ हो चुकी है और बहुत लोगों के

साथ होने वाली है जैसे यार आज किस रूम नंबर में क्लास होगी , यार क्लास कितने बजे से है , यार सर आये कि नहीं , यार मेरा भी रोल नंबर चढ़ा देना, यार मुझे भी असाइनमेंट भेज देना बगैरा बगैरा...!
और सबसे बड़ी बात पेपर टाइम में 10 इयर्स का सहारा,6 महीने जब कोई सही से कुछ पढ़ा ना हो और एक रात में सिलेबस खत्म करना हो तब हम उस बंदे का शुक्रिया अदा करते हैं जो 10 इयर्स बनाता है
सबके साथ यह चीजें होती है या नहीं होती मुझे नहीं पता पर कुछ के साथ यह हमेशा होती हैमैं अपनी फ्रेशर्स पार्टी में नहीं जा पाया था पर सीनियर्स के फेयरवेल पार्टी में गया था और सच में बहुत अफसोस हुआ था कि फ्रेशर्स पार्टी में क्यों नहीं गया और कॉलेज में या फिर अपने डिपार्टमेंट में कभी भी कुछ भी हो । तो कभी मिस मत करना क्योंकि आगे चलकर जब तुम उन कार्यक्रमों की फोटोज देखोगे और उनमें तुम नहीं होगे । तो सच कहूं तो तुम्हें बहुत अफसोस होगा ऐसा लगेगा कि जिंदगी के कितने पल खो दिए या फिर एक छोटा सा किस्सा बनाने से चूक गए...!जब इतना कुछ बता ही दिए तो थोड़ा ट्रिप के बारे में भी बता ही देते हैं सब यही सोच रहे थे कि आगरा का ताजमहल और मथुरा की मंदिर वगैरा घूमने जा रहे हैं। पर थोड़ा बुरा तब लगा जब इन दोनों में से किसी जगह हम नहीं गए, हमें विश्व हिंदी संस्थान और यमुना नदी के किनारे सूरदास जी के स्थल सूर्यकुटी पर घुमाया गया, सुबह जाते वक्त जो उत्सुकता थी और शाम होते होते खत्म होने लगी थी पर उस दिन का अफसोस नहीं हुआ क्योंकि लौटते वक्त जो शायरी और गानों की महफ़िल तरुण सर अशोक सर और विकास सर की वजह से सजी कसम से मजा ही आ गया मतलब यार कड़ी धूप में काम करने के कुछ पल बाद ठंडा पानी मिलने से जो राहत मिलती है बस उसी तरह की दवाई का काम कर गई वह महफ़िल, मतलब दिन भर की थकान बस लौटते वक्त के कुछ घंटों के सफर में मिट गई और उसके बाद वह तेज बारिश भीगते हुए कॉलेज से रात को 10:00 बजे घर जाना मजा ही आ गया था उस दिन.....!
पता है जिंदगी के हर पल को जीने और उसे खूबसूरत बनाने की एक कोशिश जरूर करनी चाहिए यदि फिर भी वह पल खराब हो जाता हैं तो कम से कम हमें इस बात का अफसोस नहीं होगा कि हमने अपनी तरफ से कोशिश नहीं की..!और हां एक और बात अगर तुम्हें शब्दों को सही तरीके से बैठाना आता है। तो तुम्हें कहानियां लिखने के लिए

इधर-उधर भटकना नहीं पड़ेगा क्योंकि तुम्हें बहुत सारी कहानियां क्लास में ही मिल जाएंगी ।बस ध्यान रखना तुम्हें किस तरह की कहानियां लिखनी है क्योंकि कुछ कहानियां शुरू ही नहीं हो पाएंगी बस एक तरफ से ही रह जाती है ।कुछ कहानियां शुरू होती है पर ज्यादा दिन नहीं चल पाती और कुछ कहानियां शुरू भी होती है। और ज्यादा दिन तक चलती भी है और पता नहीं कब तक चलेगी, मुझे तो लिखना ही नहीं आता था नहीं तो आज फेमस लेखक बन जाता , यह कहते हुए मुझे बहुत हंसी आ रही है पर सच्चाई तो यही है कहानियां हमें ढूंढनी नहीं पड़ती बल्कि हमारे इर्द-गिर्द ही रहती है।जिंदगी में हर वक्त के दो पहलू होते हैं कुछ अच्छे तो कुछ बुरे मैंने यहां सिर्फ अच्छे-अच्छे बताएं क्योंकि मैं अपने बुरे पहलू को उजागर नहीं करना चाहता , और सिर्फ मुझे नहीं शायद सबको अपने अच्छे और बुरे दोनों पहलू को याद रखना चाहिए क्योंकि यदि अच्छे पहलू हमें खुशियां देते हैं तो बुरे पहलू हमें यह सिखाते हैं कि हमारी गलतियां क्या थी जिनकी वजह से वह पहलू बुरे बन गए।खैर हमें ज्यादा दिन कॉलेज में बिताने को नहीं मिले बस 3 सेमेस्टर और चौथे सेमेस्टर के 2 महीने के बाद लॉकडाउन, ऑनलाइन क्लासेज , ऑनलाइन पेपर सब कुछ ऑनलाइन दूर-दूर से बहुत से लोगों से दूरियां भी हो गई और बहुत से लोग करीब आ गए, कुछ भी हो पर कॉलेज का हर पल यादगार है और सुना है जल्द ही हमारी फेयरवेल होने वाली है यार इतनी जल्दी तीन साल बीत गए पता ही ना चला, कॉलेज कब शुरू हुई और कब खत्म हो गई पता ही नहीं चला , कोई अपना से पराया कोई पराया से अपना हो गया पता ही नहीं चला, सिवाय एक चीज के कि वक्त किसी के लिए रुकता नहीं...बल्कि हमें वक्त के साथ चलना होता है और हर एक पल को जीना होता है..!

शायद ऐसे किस्से हर बार बनते हैं

फ़र्क सिर्फ इतना होता है

कि हर बार यहां किरदार अलग होते हैं

आखरी में बस यही कहना चाहता हूं कि

"ख्वाबों को तकिए तले दबाकर आसमान नहीं छू पाओगे

कॉलेज में नहीं बनाया तो क्या किस्से बुढ़ापे में बनाओगे"

अनुभवमणि

यह सारी बातें मैं साहित्यिक तरीके से भी लिख सकता था पर क्या करें हम थोड़े अलग टाइप के है वैसे भी साहित्यिक तरीके में मैं अपनी बातें सही तरीके से समझा नहीं पाता और बहुत लोग समझ भी नहीं पाते....!

"कुछ पाया तो कुछ खोया है हमने
पर ज्यादातर यादों को संजोया है हमने"

धन्यवाद उन सभी लोगों को जिनका इन यादों को बनाने और बहुत कुछ सिखाने में योगदान है खासकर दोस्त, टीचर्स,कॉलेज और शहर का....!

11.

मेरी यादें

खुशबू

अक्सर कहते है आपकी किस्मत आपको वहीं ले जाती है जहां के लिए आप बने हो ,मेरी किस्मत भी मुझे वहां ले गयी जहां शायद भविष्य में मुझे जाना था।स्कूल समय में ही मैंने शिवाजी महाविद्यालय में प्रवेश किया था। जब मै ग्यारहवीं कक्षा में थी ,तभी मेरा राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) में दाखिला लेने का मन हुआ पर मेरे स्कूल में NCC नहीं था । मेरे द्वारा पता करने पर पता चला कि शिवाजी महाविद्यालय राष्ट्रीय कैडेट कोर में दाखिला देती है । तभी मैंने ग्यारहवीं कक्षा से ही शिवाजी महाविद्यालय में प्रवेश किया।

राष्ट्रीय कैडेट कोर यह भारत का सैन्य कैडेट है जो छात्रों और छात्राओं को सैन्य प्रशिक्षण प्रदान करता है। यह देश के युवाओं को जागृत करने और उनमें जोश लाना और सेना में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्सहित करता है। इसका उद्देश्य ही है विद्यार्थियों को अनुशासित व देशभक्त बनाना। इसमें प्रवेश करने के बाद ही मैंने अनुशासन व समय के महत्व को जाना है। जो अध्यापिका हमें प्रशिक्षण देती थी उन्हें देखकर मुझे प्रेरणा मिलती थी की कितनी भी धूप हो मुझे डटे रहना है, हारना नहीं है और प्रयास करते रहना है।

मेरे अनुभव की शुरुआत तो यहीं से हुई क्योंकि जो अनुभव मेरे सहपाठी को स्कूल के बाद प्राप्त हुआ वह अनुभव मुझे स्कूल के समय में ही प्राप्त हुआ हालांकि उस समय मैं वहां पढ़ने नहीं जाती थी पर कॉलेज का पहला दिन तो पहला दिन ही होता है। लेकिन इसमें थोड़ा अंतर था उस समय मुझे कक्षाओं को खोजना नहीं पड़ा था और ना ही कक्षा की कोई समय सारणी थी। धीरे-धीरे समय बीतता गया और किसी कारणवश मुझे राष्ट्रीय कैडेट कोर छोड़ना पड़ा। पर मेरा नाता शिवाजी कॉलेज से नहीं टूटा। बारहवीं कक्षा की परीक्षा पास करने के साथ ही मैंने शिवाजी कॉलेज में हिंदी विभाग में दाखिला लिया। दाखिले के कुछ दिन पश्चात कॉलेज की कक्षाएं शुरू हुई और मैंने कॉलेज जाना शुरू किया।
यह मेरा पहला दिन तो नहीं था लेकिन मैंने बहुत कुछ नया अनुभव किया जैसे कि यहां स्कूल की तरह एक ही कक्षा में पढ़ाई नहीं होती बल्कि समय के साथ-साथ कक्षाएं भी बदलती रहती थी।हिंदी विभाग में दाखिला लेने के बाद मैं अपने

सहपाठियों के साथ बैठकर मौज मस्ती भी कर सकती थी जो मैं राष्ट्रीय कैडेट कोर के समय उतना नहीं कर पाती थी। उसमें समय से ना पहुंचने पर दंड भी दिया जाता था और अनुशासन पर बहुत ध्यान दिया जाता था। हिंदी विशेष की छात्रा बनने के बाद रोज कॉलेज जाना और रोज एक नई बात सीखना यह मेरे लिए एक अच्छा अनुभव रहा है। अध्यापकों के साथ समय का पता ही नहीं चलता था और कोई भी पाठ समझ ना आने पर अध्यापक बार-बार समझाते थे।

सभी अध्यापक बहुत ही अच्छे है। गुरु तो गुरु ही होते हैं फिर चाहे वो स्कूल के हो या कॉलेज के हो वे हमेशा हमारा भला ही चाहते हैं। कुछ दिनों बाद हमारा स्वागत समारोह किया गया जिसमें मेरे मित्रों ने मेरा नाम भी दिया था जिससे मैं अनजान थी। इसके बारे में मुझे स्वागत समारोह के दिन पता चला जब मेरा नाम लिया गया, पहले तो मैं समझ नहीं पाई फिर सब के कहने पर मैंने उस प्रतियोगिता में भाग लिया और इस प्रतियोगिता मैं रखें सभी खेल खेले और अंत में जीत हासिल किया जिसमें मेरे दोस्तों का बहुत बड़ा हाथ था और यह जीत उन्हीं के कारण प्राप्त हुई थी ।यह मेरा सबसे विशेष अनुभव रहा है ।
धीरे-धीरे समय बीतता गया हम प्रथम वर्ष से मध्यम वर्ष में पहुंच गए पर हमारी दोस्ती में कभी कमी नहीं आई और ना ही हमारी एकता में कभी कमी आई। कहते हैं एकता में शक्ति है जिसका उदाहरण हमारी कक्षा थी, जो कोई भी काम एकता के साथ करती थी और आज भी करती है और हमारे अध्यापक हमेशा हमारा साथ देते हैं।
कॉलेज जाने से मुझे पता चला की कॉलेज में पढ़ाई के अलावा भी अपनी मनपसंद की अन्य गतिविधियों में हिस्सा ले सकते हैं, जैसे गीत ,संगीत ,नाटक ,वाद विवाद प्रतियोगिता, चित्रकला, फैशन शोज ,खेलकूद के टूर्नामेंट आदि। मैंने भी चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लिया था जिसमें मैंने जीत तो हासिल नहीं किया पर अनुभव अवश्य किया कि हार से कभी प्रयास करना नहीं छोड़ना चाहिए । चित्रकला प्रतियोगिता हो या हिंदी विभाग द्वारा किए गए कार्यक्रमों में रंगोली बनाना हो मेरे मित्रों ने मेरा खूब साथ दिया रंगों के साथ मेरा सबसे अच्छा अनुभव रहा है कि किस प्रकार हमने चित्रकला करने व रंगोली बनाने में रंगों का किस तरह प्रयोग किया और किस प्रकार रंगों के साथ हमने मस्ती भी की। हम सभी दोस्त रोज कॉलेज जाते साथ बैठते ,बातें करते थे, उस समय बहुत ही आनंद था लेकिन विश्व में एक गंभीर बीमारी का जन्म हुआ जिससे कॉलेज, स्कूल व आना,जाना, दुकाने,बाजार यहां तक कि घर से बाहर निकलना भी बंद हो गया और पूरी व्यवस्था अस्त व्यस्त हो गई।

मेरा कॉलेज का आखरी साल कोरोना काल में बीत रहा है, इसकी वजह से हमारी पढ़ाई पर बुरा असर पड़ा, हमारी पढ़ाई घर बैठे फोन के माध्यम से होने लगी। फोन के माध्यम से पढ़ाई होने के कारण हमारा समय तो बचने लगा लेकिन इसका बुरा असर हमारे स्वास्थ्य पर पड़ रहा है मेरा यह अनुभव कुछ खास तो नहीं रहा पर मैंने इससे यह सीख लिया कि हमें हर परिस्थिति के लिए तैयार रहना चाहिए।
किसी भी परिस्थिति से भागना नहीं चाहिए बल्कि उसका समाधान निकालना चाहिए और शांत मन से काम लेना चाहिए। कोरोना के वजह से हमारा कॉलेज बंद हो गया पर इसकी वजह से हमारी दोस्ती व हमारी एकता में कोई कमी नहीं आई। कहते हैं कॉलेज की पहले वर्ष की दोस्ती सारी उम्र कायम रहती है और आने वाले तीन-चार वर्षों में यह पहले वर्ष की दोस्ती कई किस्म में उतार-चढ़ावो से गुजर कर समय की कसौटी पर खरी उतरी है जो मेरे लिए किसी विशेष अनुभव से कम नहीं है कि कैसे मैंने अपने दोस्तों के साथ लड़ाई-झगड़ा करने के बाद भी अपनी दोस्ती कायम रखी है।

स्वागत समारोह के बाद हंसते खेलते, पढ़ते, नाचते, गाते और बीतते समय के साथ हमारा विदाई समारोह भी किया जा रहा है। यह लिखते समय मेरी आंखों में नमी भी है और खुशी भी है कि हम आखरी बार एक बार फिर मिलेंगे। मेरे सभी गुरुजनों और मेरे सभी मित्रों द्वारा आयोजित विदाई समारोह में हम सब फिर मिलेंगे। मेरे सभी गुरुजन मेरे लिए प्रिय है और सभी बहुत ही अच्छे हैं प्रेमपूर्ण तथा पूजनीय है सभी गुरुजनों के साथ मेरा बहुत ही अच्छा अनुभव रहा है मैं खुशनसीब हूं कि मुझे ऐसे गुरुजनों से पढ़ने का मौका मिला। मेरे अनुभव का सिलसिला बहुत ही रोचक व आनंदमय रहा है।

अनुभव गुलदस्ता

शुभम सिंह

निकल रहा था शहर पढ़ने के लिए मां, पिता , और परिवार वालों ने आशीर्वाद दिया लेकिन मन में एक अजीब सी घबराहट थी। लेकिन साथ में राजधानी में पढ़ने का उत्साह भी था । मां की आंखें मानो कह रही हो बेटा दूर मत जाओ लेकिन ऊपर से वह ऐसा प्रदर्शन करने का प्रयास कर रही थी मानो वह बहुत खुश है। ताकि मैं कमजोर न पड़ूं

शाम 5:00 बजे ट्रेन थी। और दिल्ली तक सफर तय करने के लिए लगभग सवेरा होना तय था। रात मां कैसे गुजार रही थी उनसे बेहतर कोई नहीं बता सकता। हर एक या दो घंटे में बेटे का हालचाल ले रही थी उस रात का एक-एक क्षण उसके लिए बेचैनी भरा था। ट्रेन में, मैं दिल्ली विश्वविद्यालय की कट ऑफ चेक कर रहा था मुझे नहीं पता था कि कहां किस कॉलेज में, किस कोर्स में पढ़ना है बार-बार इधर-उधर फोन घुमा रहा था मोबाइल की बैटरी निरंतर बनी रहे और घर में बात होती रहे इसलिए दो मोबाइल लेकर निकला था लेकिन कुछ ऐसा हुआ कि उनमें से एक फोन रास्ते में ही गिर गया ।

एक मित्र ने बताया शिवाजी कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय के बहुचर्चित महाविद्यालयों में से एक है और वहां आप प्रवेश ले सकते हैं ट्रेन दिल्ली उस दिन काफी देर से पहुंची जो सुबह 7:00 बजे पहुंचती थी वह शाम 3:00 बजे पहुंची । अब प्रवेश उस दिन नहीं हो सकता था क्योंकि उस समय दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रवेश 1:00 बजे तक ही होता था। अब जहां रुकना था वहां पहुंचा। ऐसे में 4:00 बजे अक्षरधाम मंदिर के पास पहुंचा। भैया को 6:30 बजे ऑफिस से आना था तो मैंने लगभग ढाई घंटों को बिताने के लिए मंदिर से रूबरू होने का निर्णय लिया अक्षरधाम मंदिर का दृश्य भी मन मोहित करने वाला था।
रात में भैया के पास रुका था तथा इंटर नेट पर शिवाजी कॉलेज का रास्ता देखा फिर सुबह होते ही कालेज के लिए निकला । पहली बार

मेट्रो में बैठने का अलग ही मजा था। राजौरी गार्डन मेट्रो स्टेशन पहुंचकर वहां मौजूद रिक्शा वालों से कॉलेज का रास्ता पूछते हुए कॉलेज पहुंचा।। कॉलेज में पहुंचते ही अजीब सा द्वंद मन को विचलित करने लगा। क्या मेरा प्रवेश हो जाएगा या नहीं ?, क्या मैं सही पाठ्यक्रम में एडमिशन ले रहा हूं या नहीं ?। इन द्वंदो के साथ मैं वहां हेल्पडेस्क पर बैठे सीनियर से मिला और उनकी मदद लिया।

वहां उन्होंने प्रोस्पेक्टस खरीदने का सुझाव दिया। और फिर संलग्न फार्म को भरने में मेरी मदद भी किया यह सब प्रक्रिया पूर्ण करके मैं अपने विभागीय कक्ष में पहुंचा वहां मेरी मुलाकात आदरणीय डॉ. विकास शर्मा सर , डॉ. कंचन मैम , अशोक कुमार मीणा सर और डॉ. कल्पना मैम से हुई।

वहां पहुंच कर मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अपने ही दोस्तो या परिवार में बात कर रहा हूं ऐसा महसूस ही नहीं हुआ कि मैं अपने परिवार से 600 किलोमीटर दूर दिल्ली विश्वविद्यालय में हूं। सभी अध्यापकों में हंसमुख, मित्रवत , सहयोगी, सहनशीलता और धैर्यता से पूर्ण व्यक्तित्व झलक रहा था । प्रवेश की सारी प्रक्रियाएं पूर्ण हुई मैं दिल्ली विश्वविद्यालय शिवाजी कॉलेज परिवार का हिस्सा हो चुका था।
सूचना मिली कि अब आपको 19 जुलाई 2018 को ओरिएंटेशन कार्यक्रम में आना है फिर ओरियंटेशन के दिन हमने कालेज की विषय में बहुत सी जानकारी दी गई। उसके पश्चात हमारा विभागीय ओरियंटेशन कार्यक्रम हुआ। सभी अंधकार से प्रकाश की ओर उन्मुख होने की प्रेरणा प्रदान करने वाले अध्यापक मौजूद थे सभी अध्यापक एक से बढ़कर एक थे। डॉ.सर्वेश कुमार दुबे सर, डॉ. रुचिरा ढींगरा मैम, डॉ. वीरेंद्र भारद्वाज सर, डॉ. विकास शर्मा सर ,डॉ. ज्योति शर्मा मैम, डॉ. दर्शन पाण्डेय सर , डॉ.राजकुमारी मैम ,डॉक्टर सरिता मैम, डॉ. कंचन मैम, डॉ. अशोक कुमार मीणा सर , डॉ. तरुण गुप्ता सर डॉ कल्पना मैम , डॉ. प्रवीन भारद्वाज मैम, और डॉ. अरविंदर कौर मैम

अब कक्षाओं का दौर शुरू हुआ यहां स्कूल के अनुशासन से कुछ अलग स्वतंत्रता का अनुभव हुआ एक दिन पता चला कि हिंदी विभाग की साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था साहित्य संगम की छात्र कार्यकारिणी का

चुनाव होना है मेरा कोई मन नहीं था लेकिन मेरे दोस्त यशस्वी के कहने पर, मैनें भी दावेदारी पेश की और सभी के सहयोग से सह सचिव के पद पर चुना गया । अध्यापकों साथियों एवं सीनियर को भी धन्यवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने मुझ पर विश्वास किया । समय बीतता गया और ज्ञान भी बढ़ता गया लेकिन शुरुआत में प्रवेश प्रक्रिया के दौरान जिन द्वंदों में उलझ गया था उनका समाधान हो गया था मुझे यह एहसास होने लगा था कि मैंने सही पाठ्यक्रम, सही कॉलेज और अपने लक्ष्य के अनुरूप रास्ता चुना है।

मुझे साहित्य संगम सचिव के रूप में साथियों और विभाग द्वारा दी गई जिम्मेदारी को तटस्थ रूप से निभाना एक चुनौती थी।क्योंकि इसमें तथस्थ रूप से कार्य करने के लिए एक - एक कदम को फूंक - फूंक कर रखना अनिवार्य था। मेरे लिए मेरे कक्षा के सभी सहपाठी समान थे। तो जब मेरा मन होता या कोई कार्य होता तो किसी भी ग्रुप के सहपाठियों के साथ बैठ जाता ।

कॉलेज में जो सबसे बेहद खूबसूरत अनुभव रहा वह मेरे गुरुजनों का मित्रता पूर्ण ,मार्गदर्शक और सहयोगी स्वभाव है जिन्होंने मेरा दिल जीत लिया हिंदी विभाग में लगभग 14 अध्यापक है। मेरा सभी से अत्यंत गहरा और अनुपम लगाव है मुझे ऐसा लगता है यदि मैं उनके साथ व्यतीत किए गए अनुभवों का वर्णन करूं तो शायद एक किताब बन जाए । यहां इस लेख में शब्द सीमा की प्रतिबद्धता होने के कारण मुझे अपनी कलम को यहीं रोकना होगा।

शिवाजी कॉलेज हिंदी विभाग के माध्यम से मैंने बहुत कुछ सीखा। साहित्य संगम में प्रथम और द्वितीय वर्ष में क्रमशः सह -सचिव और उपाध्यक्ष पद पर कार्य करके नेतृत्व , संयोजन, गंभीरता ,धैर्य और साहस जैसे गुणों को विकसित करने का अवसर मिला। तृतीय वर्ष में अध्यक्ष पद पर कार्य करते हुए अभी भी बहुत कुछ सीख रहा हूं । इसके अलावा कैंप में कंस का उत्तम चरित्र निभाने के कारण कर्नेल आर.बी. चौधरी जी द्वारा सिल्वर मेडल प्राप्त हुआ। द्वितीय वर्ष में शिवाजी कॉलेज स्टूडेंट यूनियन में सचिव पद पर भी चुनाव लडा। लेकिन यहां मैं जीत भले ही ना सका लेकिन इस हार ने मुझे बहुत कुछ

सिखा दिया। कॉलेज की अन्य सोसायटी डिक्टम और WDC का भी मेरे चरित्र निर्माण में बहुत बड़ा योगदान है।

तृतीय वर्ष की पढ़ाई ऑनलाइन होने के कारण यहां का अनुभव कुछ अलग रहा। इस दौरान घर से पढ़ना पड़ा लेकिन अध्यापकों के मार्गदर्शन और सहयोगी स्वभाव के कारण यहां भी कोई समस्या नहीं आई।
मैं जैसे पहले ही बता चुका हूं कि मैं अपने कॉलेज में व्यतीत किए गए 3 सालों का विस्तृत चर्चा करूं तो किताब लिख जाए तो मैं अपनी कलम को नाखुश करते हुए कुछ सार रूपी बातों के माध्यम से अपने लेख को समाप्ति की ओर पहुचाना चाहूंगा ।

शिवाजी कॉलेज के हिंदी विभाग मेरे रोम - रोम में बस चुका है ,क्योंकि इससे मेरा दिल का रिश्ता है यह लेख लिखते -लिखते मेरी आंखों में बादल उमड़ने लगे जो बारिश करने को बेताब थे। जिस दिन से जूनियर्स के माध्यम से पता चला कि आपका विदाई समारोह 19 मार्च को है मन में अजीब सी बेचैनी और हलचल है।

मुझे पता है मुझे सभी अध्यापक ,
सहपाठी और अनुज (जूनियर) बहुत याद आएंगे। हम कॉलेज से भले ही अलग हो रहे हैं ,लेकिन दिल से कभी नहीं हो सकते।
मैं बहुमुखी प्रतिभा के धनी ,सूर्य की तरह ज्ञान रूपी प्रकाश बिखेरने वाले गुरुजनों को सादर नतमस्तक होकर प्रणाम करता हूं और आपका आशीर्वाद चाहता हूं और मेरा ऐसा विश्वास है कि आपका और मेरे माता पिता का आशीर्वाद यदि मेरे साथ हो तो मुझे अपने लक्ष्य को पाने और आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता और मैं अपने सभी अध्यापकों का ऋणी हूं। एक बार पुनः तहे दिल से मेरा नमस्कार और धन्यवाद।

अनुभूति

मोनिका

कुछ बातें कब जीवन का एक प्रमुख हिस्सा बन जाती हैं, पता ही नहीं चलता। वे लोग जिन्हें हम कभी जानते नहीं थे उनसे एक अटूट रिश्ता सा बन जाता है जो कई बार समझ नहीं आता।
ऐसे ही मुझे याद है अपने कॉलेज का पहला दिन जब कॉलेज में जाने से डर लग रहा था मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था।

बहुत ही असहज महसूस कर रही थी, बार -बार लग रहा था कि कहीं रैगिंग न हो जाए और अगर रैगिंग हुई तो मैं क्या करुँगी? यही सब बातें चल रही थी मन में, लेकिन जब कॉलेज में गयी तब समझ आया कि वास्तविकता और कल्पना में कितना फर्क होता है।

मैंने जो अपने मन में अपने कॉलेज की कल्पना की थी। कॉलेज उससे बिल्कुल ही अलग था। मुझे तो लगता था कि कॉलेज के अध्यापक बच्चों पर ध्यान ही नहीं देते। लेकिन ऐसा बिल्कुल भी नहीं था। अगले दिन ज़ब मैं कॉलेज गई तो थोड़ा ख़ुश थी।

लेकिन एक नयी परिस्थिति से गुज़रना पड़ा मुझे, वह थी लड़को से बात करना, और उनके साथ बैठना,पढ़ना आदि। जो मेरे लिए बहुत मुश्किल था। क्योंकि मैं शुरू से ही गर्ल्स स्कूल में पढ़ी थी इसीलिए मुझे लड़को से बात करना कम आता था। और उनसे बात करने में, मैं बहुत असहज महसूस करती थी मुझे याद है कि मेरी कक्षा का राहुल जो मुझे देखकर मुस्कुरा रहे थे। इस उम्मीद में कि मैं भी उससे बात करू, लेकिन अपनी असहजता के कारण मैं उसके पास न जाकर कहीं और ही भाग गई।

अब सोचती हूँ इस बारे में तो बहुत हँसी आती है। लेकिन अच्छा भी लगता है इन बातों को याद करके। जैसे - जैसे वक़्त बदलता गया सब ठीक होता चला गया। नये दोस्त बने, जान पहचान भी बढ़ गई और

फिर कॉलेज भी अपना सा लगने लगा। वो भी इतना ज्यादा कि मैं सबसे कहती फिरती की मेरा कॉलेज, मेरा कॉलेज। हिंदी विभाग की फ्रेशर पार्टी, फेयरवेल पार्टी आदि सभी मुझे अच्छी तरह याद है कॉलेज में आकर कब हम बच्चों ने अपने प्रोफेसरस से स्वयं को इतना जोड़ लिया पता ही नहीं चला। कंचन मैम का कोई कविता या पद पढ़ाते हुए उनके शब्द-अर्थ बताना और पढ़ाने के बाद नोट्स लिखवाना और फिर समझाना। और तरुण गुप्ता सर का हर विषय शौक से पढ़ाना और मेरा कक्षा के बीच में ही हँस जाना, गलती हो जाए फिर भी प्यार से समझाना, सब कुछ एक ख्वाब सा लगता है अब। क्योंकि ये सब बाते अब एक यादें बन गई है। रुचिरा मैम का अनुशासन प्रिय होना मुझे अच्छा लगता है जब तक उनसे मिली नहीं थी, मैं तब तक सोचती थी कि विद्यार्थी उनसे डरते है तो शायद वो बहुत ही गुस्से वाली होंगी, लेकिन जब उनसे मिली, उनसे पढ़ी तो बहुत अच्छा लगा। काफ़ी हद तक समझ पायी मैं उन्हें।

विकास सर भी बहुत अच्छे है सारे ही छात्र - छात्राओं की मदद करना, और कक्षा में भी राजनीतिक और क्रिकेट के बारे में बताना मुझे बहुत अच्छा और काफ़ी दिलचस्प लगता था। और मजे की बात तो यह है कि कभी - कभी हम जानबूझकर विकास सर से ऐसे विषयों के बारे में पूछने लग जाते थे। जब हमारा पढ़ने का मन नहीं होता था तो हम ऐसा ही करने की कोशिश करते थे लेकिन उनके इन विषयों पर दिए हुए सुझाव भी बहुत दिलचस्प होते थे। विकास सर का हेल्पिंग नेचर मुझे बहुत पसंद है। सब कुछ अच्छे से चल रहा था लेकिन कोरोना ने सब बदल दिया सोचा था आखिरी साल बचा है कॉलेज का। बहुत यादगार बनाएंगे सब मिलकर। यादगार तो बन ही गया वो भी लेकिन घर बैठकर। जो भी हुआ हो, ये आखिरी साल बहुत कुछ याद दिला रहा है। कॉलेज में आते वक़्त कभी नहीं सोचा था मैंने, कि इस कॉलेज से इतनी यादें जुड़ जायेंगी कि मैं उन्हें समेटने में भी आना कानी करूंगी।

कॉलेज के यादगार पल

प्रीती सिंह

पिछले तीन वर्षों में शिक्षकों व सहपाठियों के साथ मेरा अनुभव। मेरा शिवाजी कॉलेज में दाखिला लेने का सिर्फ एक लक्ष्य था कि मेरी दीदी को मैं और किसी भी तरह से कम्पीट नहीं कर सकती थी ,यह मेरी अपनी दीदी से ईर्ष्या नहीं थी ।बस उनसे कुछ सीखा था और उसे ही पूरा करना था ।अपनी दीदी की तरह मुझे भी शिवाजी कॉलेज में दाखिला लेना था।जो मैंने करके दिखाया ।हालांकि हमारे विषयो में ज़मीन-आसमान का फर्क रहा।अपनी-अपनी जगह हम दोनों के विषय ही विशेष थे।मेरा हिंदी विशेष और मेरी दीदी का वनस्पति विज्ञान विशेष था। अब मैं शिवाजी कॉलेज में हिंदी विभाग से हिंदी विशेष की शिक्षा प्राप्त कर रही हूँ। लगभग तीसरा साल भी पूरा ही समझिए।इन तीन सालों में से केवल हम डेढ़ साल ही कॉलेज आए होंगे,क्योंकि सभी को पता है कि पिछले साल से कोरोना महामारी काफी तेज़ी से फैल रही है। जिससे हम केवल डेढ़ साल ही कॉलेज जा पाए हैं। और बाकी ऑनलाइन कक्षाएँ शुरू रही, इनसे पीछा नहीं छूट पाया । पहले वर्ष में सब नया था। धीरे-धीरे कक्षाओं की समय-सारिणी और वहाँ के तौर -तरीके समझ आने लगे।सबसे महत्वपूर्ण विषय यह है कि पहले वर्ष में जितने अध्यापक या अध्यापिकाएँ मिली , वह हर विषय को अच्छे से समझाते थे,व साथ ही अध्यापक अपने कॉलेज के अनुभव भी कक्षाओं में साझा करते थे। सभी अध्यापक व अध्यापिकाएँ पढानें में श्रेष्ठ रहें हैं । कुछ ऐसे भी अध्यापक व अध्यापिकाएँ से आमना- सामना हुआ जो कि अपनी तरफ से बच्चों को समझाने की पूरी कोशिश करते थे ,पर उनका समझाना समझ नहीं आता था ।

अभी तीसरे वर्ष तक जितने भी अध्यापक व अध्यापिकाओं से

मिलें हैं सभी स्वभाव, बुद्धि आदि से अपने ही विषयों में सर्वश्रेष्ठ हैं।कुछ अध्यापकों से पढ़ना हमारे मित्रों को इतना पसंद था कि उन अध्यापक को अपने उस सत्र में लाने के लिए मेरे मित्रों के समूह ने औपचारिक समूह पर ही जंग छेड़ दी। हाँ,बाद में अन्य अध्यापकों से डांट भी सुनने को मिली ।लेकिन हमें जिन अध्यापक से पढ़ना था ,हमें उनसे दोबारा पढ़ने का अवसर मिला। इन तीन सालों में तीन अध्यापकों से हमारे कक्षा के अधिकतर बच्चों का लगाव रहा है।

(डाॅ विकास शर्मा , डाॅ वीरेन्द्र भारद्वाज, डाॅ तरूण गुप्ता ।)इन तीन अध्यापकों के साथ इतना लगाव व आदर भाव हम सभी के मन में रहा है क्योंकि पहले साल से आखिरी वर्ष तक यह अध्यापक हमारे संपर्क में रहें हैं। अपनी संवेदनशीलता,शांत भाव व बच्चों के साथ समय-समय पर दोस्त की तरह इनका स्वभाव हमारे मन में इन अध्यापिकों की मनोवृत्ति को प्रस्तुत करता है ,कि मनुष्य कितना भी बड़ा हो जाए व किसी भी पद पर नियुक्त हो ।वह अपना स्वभाव और दूसरों को समान नजरों में रखता है। यह इन अध्यापकों के साथ बीते पलों में समझ आ गया। इन सभी अध्यापकों के साथ - साथ और सभी अध्यापक व अध्यापिकाओ के लिए भी आदर भाव हैं ।

डॉ. विकास सर के साथ पिकनिक के दिन बस में होने वाले डाँस के साथ कक्षा में पढाई के साथ होने वाले हँसी मजाक का सफर बहुत ही यादगार रहेगा।

डॉ. तरूण गुप्ता के साथ जब वह कक्षा परीक्षा की तारीख देते थे ।जब कक्षा परीक्षा देना होता था,तो हम सबका लटका हुआ चेहरा। फिर भी कभी-कभी कक्षा परीक्षा देनी ही पड़ जाती थीं ।ज्यादातर सर दो चार दिन का समय दे दिया करते थे। कॉलेज के एक दिवसीय परिसर में सर से कविताएं व गज़ल सुनना व कक्षा के अन्य बच्चों के साथ मिलकर जवाब में कविता सुनाना ।

डॉ. वीरेन्द्र भारद्वाज बहुत ही शांत सरल स्वभाव के अध्यापक हैं। इनकी कक्षा में सिर्फ किताबों से ही शिक्षा नहीं मिलती थी ,सर खुद अपने अनुभव साझा किया करते थे व किताब से अलग उदाहरण देकर

उस विषय को बहुत ही आसानी से समझाया करते थे ।सर के साथ मेंटर समूह के समय ब्रू के पीछे पूरे समूह के साथ छाछ पीना व साथ ही में बातें करना,अत्याधिक सुहावना पल था। क्योंकि जब मेंटर समूह के बाद यह बात कक्षा में बताई तो हमारे ही मित्र हमसे चिढ़ रहे थे । कि हमें अच्छे सर मिलें हैं और वह सभी सही थे।

यह तो था मेरा अध्यापक व अन्य अध्यापिकाओं के साथ अनुभव। अब इनके पश्चात भी एक महत्वपूर्ण अनुभव रह गया है जो सभी के साथ होना जरूरी है ,वह हैं- मित्र ।तो अब हम आते हैं प्रथम वर्ष के मित्रों के पास इनके होने से कॉलेज में बीते दिनों का पता ही नहीं चला की कब हमारा फाइनल ईयर आ गया।अपने दोस्तों के साथ बिताया हर पल बखूबी याद रहेगा।

कॉलेज में पढ़ाई के समय होने वाली मौज-मस्ती हो या फिर कोरोना काल में कॉलेज के बाहर खड़े होकर दोस्तों के जन्मदिन मनाना ।जब भी कॉलेज या दोस्तों की याद आती थी तभी हम योजना बनाते थे कि कॉलेज में मिलेंगे। लेकिन कोरोना के कारण कॉलेज में जाने की अनुमति नहीं थी। परंतु वहां के गार्ड अंकल से इतनी अच्छी सूझबूझ है कि वह कॉलेज में घूमने की अनुमति दे दिया करते थे। और कहते थे कि बेटा जल्दी आ जाना नहीं तो हमें ही डांट पड़ेगी। हम दोबारा कॉलेज के समय को याद कर ,वह दोस्तों से मिलकर कॉलेज से घर को लौट जाया करते थे। पुस्तकालय खुला तो हमें पुस्तकालय खुलने की खुशी नहीं बल्कि यह खुशी थी कि अब हम बिना टाइम लिमिट के कॉलेज में रुक सकेंगे और कॉलेज में लॉकडाउन के समय में और भी यादें इकट्ठा कर सकेंगे।

कॉलेज से बहुत सी यादें जुड़ी हैं और जब भी हमें कॉलेज दिखेगा ,जब बहुत यादें आँखों के सामने आएंगी। अब हम कक्षा से वॉशरूम के बहाने निकलकर बारिश में भीग नहीं पाएंगे और यह मेरे दोस्तों के साथ बिताए हुए पल मुझे बहुत याद आएंगे।

डॉ रुचिरा मैम की सुबह 9:00 बजे की कक्षा में उपस्थित होने के लिए

सुबह की चाय छोड़नी पड़ती थी। अब यह छोड़नी नहीं पड़ेगी ।मैम की क्लास खत्म होने पर अपने दोस्तों के साथ कैंटीन में जाकर ब्रेड पकोड़े और चाय पीने का वह पल बहुत याद आएगा।

डॉ. विकास शर्मा की कक्षा शुरू होने पर 20 मिनट देर से जाने पर भी सर का कुछ ना कहना और सर की कक्षा में लास्ट बेंच पर अपने ब्रो कोड वाले भाइयों (लड़कों को भाई सुनने में अच्छा नहीं लगता तो इसीलिए हमने ब्रो बोलने का निर्णय लिया) के और दोस्तों के साथ बैठना- मस्ती करना ।सर के पूछे हुए प्रश्नों का जवाब देना बहुत याद आएगा। जब सर अचानक से नाम लेते थे कि प्रीती बेटा कि यह कैसे होगा आप बताओ ।उस समय हंसी को रोकना और प्रश्न को समझ कर उसका जवाब देना । फिर सही जवाब देने के बाद बैठने पर दोस्तों से यह सुनना कि बेटा बड़ी तेज है, सही जवाब दे दिया।

वह कॉलेज के दिन सच में थे कितने सुहाने, ना थी चिंता गुजरे दिन की, ना कोई फिक्र अगले दिन की..... अटेंडेंस और इंटरनल्स की ही तो थी मारामारी, जिंदगी की तो नहीं थी कोई भी ज़िम्मेदारी.....

याद है वह कॉलेज के दिन, वह बंक किए हुए राजनीतिक विज्ञान के लेक्चर, वह कॉलेज की कैंटीन को सबसे खराब बताना..... एक साथ मथुरा, कुरुक्षेत्र, वैष्णो देवी, शिमला, मनाली जाने की योजना बना कर भी अंतिम क्षण में योजना कैंसिल करना।

कॉलेज की लड़कियों को अपने ब्रोकोड (जितने भी मेरे लड़के मित्र हैं)वाले भाइयों के साथ मिलकर उनको निहारना। वह दोस्तों के साथ पी हुई चाय याद आती है। कैंटीन में पैसे मिलाकर छोले भठूरे खाना। अब रह जाएंगी तो बस अच्छी यादें.....

वह रात रात भर दोस्तों के साथ फोन पर बातें करना, चैटिंग करना ।फिर सुबह कॉलेज देर से आना ।कुछ अजीब से नमूनों का दोस्त बन जाना, हर आउटिंग पर सबके साथ बाहर घूमने जाना। वही किसी की शायरी तो किसी की ग़ज़ल तो, किसी का कविता कहना। हर जगह सब नमूनों का साथ दिखना।

कॉलेज की मस्ती और कॉलेज की अपने आप में ही हम छोटी- सी हस्ती। और हां कीथम लेक आगरा के ट्रिप का नहीं है टोटल, बहुत याद आएगी शेकर वाली बोतल । अब जुदा हो जाएंगे सब, बस फोन पर ही हुआ करेंगी बातें ,याद आएंगे वह कॉलेज के दिन। यकीन पर यकीन दिलाते हैं दोस्त, राह चलते बेवकूफ बनाते हैं दोस्त, शरबत बोलकर कुछ और ही पिलाते हैं दोस्त, पर कुछ भी कहो याद बहुत आएंगे यह दोस्त।

कॉलेज कांप्लेक्स में कक्षा बंक करके बैठना साथ में स्पीकर में भोजपुरी गाने बजा कर एक - दूसरे से मज़े लेना। बैक स्टेयर्स के पास समूह बनाकर बीच में स्पीकर रखकर गोला बनाकर गाने को दोहराना और फिर पागलों की तरह हंसना, वह भी क्या दिन थे। कॉलेज के दोस्तों की बर्थडे पार्टियां बहुत याद आएंगी। साथ ही समोसा पार्टी और कोल्ड ड्रिंक पार्टी भी बहुत याद आएगी।

कॉलेज में गर्मी लगने पर बंक करके बर्गर किंग जाना। सिर्फ खाने से मतलब ना रखना बल्कि बर्गर खाने के बाद भी एक घंटा, वहां A.C. की हवा में बैठना यही मेन मकसद होता था।

सभागार में होने वाले समारोह में इसलिए बैठा करते थे कि फूड कूपन लेकर मज़े से खाना खाएंगे, एक प्लेट में तीन- चार लोग खाया करते थे।

बहुत सारी यादें हैं कॉलेज की खट्टी मीठी यादें। ज़्यादातर यादें मीठी हैं, मेरे दोस्तों के साथ मेरी इतनी यादें हैं कि शायद मैं भी बताते -बताते थोड़ा थक जाऊं ।तब भी 3 साल में से डेढ़ साल कॉलेज के और डेढ़ साल कोरोना काल में जो यादें बनी है। उन्हें बयां कर पाना थोड़ा मुश्किल होगा।इन तीन सालों की यादें हमेशा यादगार रहेंगी।

एक चीज़ और लॉकडाउन से पहले यानी कॉलेज के समय पर एक गार्ड आंटी हैं, जो हमेशा ऐसे चीखती थी कि पता नहीं क्या कर दिया हो। कुछ भी बोलने लगती थी ,बिना उनको परेशान किए। उन्होंने और भी साथियों के साथ ऐसे ही व्यवहार किया। लेकिन सुनने की भी एक सीमा होती है और अपने से बड़ों का सम्मान भी करना चाहिए, लेकिन

उसकी भी एक हद होती है ।लेकिन बिना गलती के सुनना ठीक नहीं। कोराना काल के समय गार्ड आंटी बिना बात के आकर डांटने लगी और हमारी बिना गलती के उल्टा सीधा बोलने लगी।तब हमने भी कहा जब हमारी गलती नहीं है, तो आप हमें क्यों डांट रही है और वह दूसरों को मास्क पहनने के लिए कह रही थी बल्कि उन्होंने खुद ने मास्क नहीं पहना था। तो हमने भी बोल दिया कि आंटी पहले आप मास्क पहनो। फिर उसके बाद हमसे बात कीजिए। तो क्या फिर तो आंटी और भड़क गई कि वहां पर जो गार्ड अंकल है, वह भी आ गए अरे! बेटा आप लोग थोड़ा अलग चले जाओ ।अब यह चुप नहीं होंगी ऐसे ही बोलेंगी। उसके बाद जब भी हम कॉलेज गए ,आंटी ने कोई बदतमीज़ी नहीं की ।ना ही वह बिना फालतू के हम पर चीखती हैं, बल्कि अब हमें हंसकर कहती कि जाओ बेटा। सिर्फ यह बदलाव हुआ है कि आंटी थोड़ा ठीक हो गईं, जो हम बहुत पहले चाहते थे।

ऐसी बहुत सी घटना है पर अब सब बयां नहीं की जा सकेंगी। आप लोग पढ़ते समय शायद ज्यादा देखकर इसे पढ़ो ही ना इसीलिए इन्हें इतने पर ही समाप्त करते हैं ।कॉलेज के हर दिन, हर समय को बहुत याद करेंगे। साथ सभी अध्यापक व अध्यापिकाओं द्वारा किए गए मार्गदर्शन व उनका नम्र व्यवहार हमेशा याद रहेगा। कॉलेज कि वह कुछ खास जगह है जिन पर हम मस्ती किया करते थे । खो-खो पकड़म पकड़ाई बहुत से खेला करते थे ।वह क्लास रूम में लूडो खेलना या फिर दूसरे दोस्तें की अटेंडेंस बोलना सब बहुत याद आएगा।

अनुभव

राहुल

अनुभव : यदि अनुभव की बात की जाए वो भी कॉलेज के समय की तो बात ही काफी रोचक होती है ।
कॉलेज का जब पहला दिन था मन में कई अनगिनत विचार आये की आज मेरे साथ ऐसा होगा , आज कुछ नया सीखने को मिलेगा, अब कुछ नए नए साथी बनेंगे आदि प्रकार के विचार आते रहे । जब कॉलेज में जाना हुआ तो वहा पर किसी से जान पहचान नहीं थी किससे कैसे बात की जाए और कहा बैठना है कहा नहीं, कॉलेज के क्या नियम है ?, फिर भी इन सभी बातों को पीछे छोड़ जहा जगह मिली वहा बैठ गए , जिनसे बात करने का मन किया बात किए , कॉलेज के जो भी नियम होंगे वो आगे समझ जायेंगे , सबसे पहले तो हमे कॉलेज का निरीक्षण करने दो। बस फिर क्या जो दोस्त उस समय बने बस उन्ही के साथ निकल दिए कॉलेज को देखने कॉलेज कैसा है?,
फिर समय बदलता गया और साथ ही कॉलेज की सोसायटी के बारे में जानकारी मिलने लगी , सोसायटी तो कई सारी थी पर क्या इनको एक साथ आगे जारी रख पाऊंगा , बस इसी ख्याल के कारण मैने प्रथम वर्ष में केवल एनसीसी का कैडेट बनने का निश्चय किया बाकी सोचा आगे तो अभी पूरा समय है उस बीच दूसरी सोसायटी से जुड़ जायेंगे । एनसीसी केवल एक सोसायटी नाम मात्र नहीं **एनसीसी** छात्रों में सहन शक्ति , मानसिक रूप से तेज, समय का पाबंधी बनाती है। इसी के साथ साथ पढ़ाई भी जारी रखा और फिर कहानी , कविताओं को पढ़ते पढ़ते मुझे लिखने का शौक कब हो गया पता ही नही चला , फिर क्या था खाली समय पाया और बैठ गए लिखने । जब लिखता था तो उस समय समझ नहीं आता था की मैने अच्छा लिखा है या नहीं इसके लिए अपने ही विभाग के प्राध्यापको की मदद लेने लगा जिन्होंने मेरा काफी सहयोग दिया और मेरे मनोबल को भी बढ़ाया। ऐसे ही फिर जब द्वितीय वर्ष में आया तो कॉलेज की **एनएसएस** और **डब्लू डी सी** से भी जुड़ा एनएसएस में पहले तो मैं नुकड़ नाटक टीम का सदस्य बना और फिर एक कंटेंट राइटर इसी के साथ साथ डब्लू डी सी में भी एक कंटेंट राइटर टीम का सदस्य बना ।

कॉलेज की जिंदगी काफी अच्छी चल रही थी की अचानक कोविड 19 का आना हुआ और सब कुछ बेकार कर के रख दिया।

फिर क्या जो अभी मैने सीखना शुरू किया था वो वही पर स्थगित हो गया , प्राध्यापको मिलना नही होता था जिससे की जो कुछ भी कॉलेज में रह कर सीखना था सब समाप्त हो गया , एक चीज मिली तो वो भी ऑनलाइन क्लास जिसमे कभी नेटवर्क आया तो ठीक और नही आया तो भी ठीक ।उपरोक्त कुछ बातें बीते कॉलेज के दिनों की है जो की भविष्य में हमेशा याद रहेंगी।

धन्यवाद🙏

मेरा अनुभव

शाश्वत मिश्र

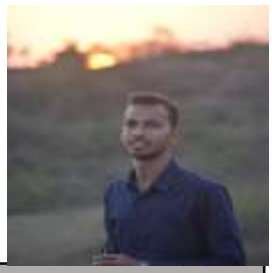

किसी ने सच ही कहा है, कि जो होता है वह अच्छे के लिए होता है। 12वीं के बाद में आईआईटी की तैयारी करने के लिए कोटा जाना चाहता था। लेकिन किसी कारणवश मैं वहां नहीं जा पाया, और मैं इसे दुर्भाग्यपूण नहीं कहूंगा, इसे संयोगवश ही कहूंगा कि मेरा दाखिला यहां शिवाजी कॉलेज में हो गया, जून 2018 में मेरा यहां दाखिला हुआ, और शायद 20 या 21 जुलाई को मेरा कॉलेज का पहला दिन था। जब मैं पहले दिल गया तो अंदर ही अंदर बहुत से सवाल चल रहे थे, कि यहां अध्यापक कैसे होंगे, दोस्त कैसे मिलेंगे, और सबसे महत्वपूर्ण सवाल कि यहां रैगिंग आदि तो नहीं होती, फिर कुछ दिनों बाद एक सीनियर ने बताया कि पूरे दिल्ली विश्विद्यालय में कहीं भी कोई भी ऐसी घटना करना गलत है, और यदि कोई ऐसा करता है, तो उसके खिलाफ सख्त कदम उठाया जाता है। तो एक सवाल का जवाब तो मिल गया, बाकी सवालों का जवाब भी धीरे-धीरे मिल गया, और वह चाहे दोस्त हों या अध्यापक सभी के साथ मेरा अच्छा अनुभव रहा, और सभी अच्छे हैं।

वैसे मैं सभी अध्यापकों को पसंद करता हूं, पर मुख्य रूप से विकास सर, वीरेंद्र भरद्वाज सर, तरुण सर और अशोक मीना सर। अशोक मीना सर तो बिल्कुल भाई की तरह बात करते हैं, उन्होंने आज तक मुझसे कभी अध्यापक की तरह बात ही नहीं की, हमेशा बड़े भाई की तरह बात की। हमारे सभी अध्यापकों ने हमें कभी अनजान नहीं महसूस होने दिया, मैंने स्वयं एक बार अपनी व्यक्तिगत बातें अध्यापकों से शेयर की थी। तो मुझे कभी ऐसा लगा ही नहीं की हमारे टीचर्स कोई दूसरे लोग हैं। इसके अतिरिक्त कल्पना मैम, कंचन मैम, दुबे सर और रुचिरा मैम सभी बहुत ही अच्छे अधयपक हैं। हां, दुबे सर से मेरा कम आमना-सामना हुआ, क्योंकि उन्होंने हमको केवल ऑनलाइन मोड में ही पढ़ाया है,और बाकी सभी अध्यापकों ने हमें कम से कम एक बार ऑफलाइन मोड में पढ़ाया ही है। और अब तो 2 महीने बचे हैं तो कुछ चीजें तो याद आयेंगी, वो कॉलेज के ग्राउंड में क्रिकेट खेलना, लाइब्रेरी में जाकर पढ़ने के बहाने बातें करना और लड़कियां

देखना और अटेंडेंस के लिए शुभम को बोलना कि भाई अटेंडेंस लगा देना,और राजनीति विज्ञान के उबाऊ पर महत्वपूर्ण लेक्चर्स आदि चीजें हैं। जो याद तो आयेंगी। इसी प्रकार समय धीरे-धीरे आगे बढ़ता रहा और जब दूसरा वर्ष प्रारंभ हुआ, तो मुझे हिंदी विभाग की संस्था साहित्य संगम का कोषाध्यक्ष बनाया गया, जिसमें हमारी समिति ने सभी कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न किए। इसमें हमारा सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम था। जो एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी हुई थी। यह कार्यक्रम बहुत ही अच्छे तरह से हुआ था। और इसी कारण हमें सभी जगह से कार्यक्रम के सफल आयोजन होने की बधाईयां मिली थीं। और मुझे अपने कॉलेज के जीवन में जो सबसे ज्यादा मजा आया, वह कॉलेज के शैक्षणिक भ्रमण पर, पहली बार तो हम दिल्ली के अंदर ही घूमे थे, अंबेडकर जी का कोई स्थान था, उस दिन पहली बार हमने विकास सर और तरुण सर को सपना चौधरी के गानों में डांस करते हुए देखा था। इसी प्रकार दूसरे शैक्षणिक भ्रमण में हम लोग मथुरा और आगरा घूमने गए थे,तो वापस आते समय थके से थे, तो रास्ते में तरुण सर की कविताएं और शायरियों ने सभी की इस तकलीफ को दूर कर दिया।

तरुण सर का ये अंदाज हमने पहली बार देखा था। और इसके कुछ दिनों के पश्चात ही कोरोना महामारी का दौर आ गया। और इस प्रकार से हम कॉलेज में केवल डेढ़ वर्ष व्यतीत कर पाए। तो पूरे तीन वर्ष ना व्यतीत कर पाने का मलाल तो रहेगा ही। और हांअंत में, मैं अपने सभी शिक्षकों और मित्रों का शुक्रिया अदा करना चाहूंगा, जिन्होंने इन तीन सालों में मुझे कभी अनजान नहीं महसूस नहीं होने दिया। क्योंकि मै अपने घर से पहली बार बाहर इस अनजान शहर में आया था। लेकिन मुझे कभी ऐसा लगा ही नहीं कि , मै अपने घर से बाहर हूं। यहां पर भी मुझे अपने घर जैसा प्यार, आदर और सम्मान मिला।अंत में कुछ कहना चाहूंगा, कि_

हम अब इस कॉलेज में तो नहीं रहेंगे, लेकिन इसे याद जरूर करेंगे। हर पल, हर क्षण।

बहुत बहुत धन्यवाद,

हिंदी विभाग, शिवाजी कॉलेज

मेरा सफर

अनिल

मुझे घूमना-फिरना बहुत पसंद है; इसलिए मुझे जब भी मौका मिलता है तो मैं उसे हाथ से जाने नहीं देता और यात्रा में जीवन के आंनद का अनुभव लेता हूं। मुझे क्लास से ज्याद क्लास के बाहर का अनुभव पसंद है।अब आप इतना तो समझ ही गए होंगे कि मेरी रूचि किसमें है और मुझे क्या अधिक आनंद देता है। मैं न तो उन होशियार विद्यार्थियों में से हूं जिनके लिए कॉलेज जाने का मतलब पढ़ाई है और न उनमें से जिनके लिए ये एक टाइम पास या केवल दबंगई दिखाने का जरिया है ; मैं क्लास के उन बच्चो की श्रेणी में रहा जो क्लास मै शांत,स्वभाव से नम्र और अपने गुरुजनों का आदर सम्मान करते हैं और अपने सहाठियों के साथ भी हमेशा प्यार से और सहयोग भाव से रहा।

मुझे स्कूल टाइम से ही NSS और NCC में रूचि थी और स्कूल में मैं NSS का हिस्सा था। कॉलेज में भी मैने NSS और NCC ज्वॉइन की; NCC तो मैं अपने निजी कारणों को वजह से पूरा नहीं कर पाया, मगर NSS का हिस्सा तो आज भी हूं। हालांकि मैनें कई और सोसाइटी भी जैसे;WDC,EDC,YUVA ज्वॉइन की और आज भी उनका हिस्सा हूं। मेरा इन सभी सोसाइटियों के साथ का अनुभव शानदार रहा और काफी कुछ सीखने को भी मिला। फिर भी मुझे सबसे ज्यादा पसंद NSS ही था क्योंकि इसकी जो भी गतिविधियां होती थी मुझे उनसे बहुत कुछ समझने और सीखने को मिलता था ; इसमें कई सामाजिक मुद्दों को लेकर समय-१ पर कार्यकर्मों का आयोजन ना केवल बेविनार के रूप में बल्कि कैंप, नुक्कड़नाटक द्वारा भी जागरूक किया जाता था। इस मे समाज को खोखली करती जा रही नशा, जीवन का आधार जल संरक्षण और भी कई सामाजिक, प्राकृतिक और विद्यार्थी जीवन में तनाव ; जो एक बहुत ही गंभीर समस्या बनता जा रहा है जैसे गंभीर मुद्दों को लेकर न केवल जन जागरूक ही किया बल्कि तनावमुक्त कैंप का आयोजन भी किया।

वो कहते है न कि practical beter than theory" तो बस मुझे यही

अनुभव होता है इन सोसाइटी में; और मेरा ये भी मानना है कि किताबी ज्ञान के साथ जीवन के यथार्थ का अनुभव भी बहुत जरूरी है। NSS इसलिए भी ज्यादा पसंद था क्योंकि इसके जितने भी मेरे अन्य साथी थे वो सभी बेशक अलग-२ कोर्स से थे मगर सभी अच्छे और मिलनसार थे ! विशेषत तौर पर हमारी NSS इंचार्ज आदरणीय रुचिरा मैम।
सौभाग्य से मुझे इनसे द्वितीय वर्ष में हिंदी कहानी और उपन्यास पढ़ने का मौका मिला। वैसे संदेह तो इसमें भी नहीं कि मेरे अन्य सभी गुरुजन भी अत्यन्त पूजनीय, आदरणीय और सम्माननीय हैं। इनके व्यक्तित्व और विवेक,ज्ञान से मुझे जीवन को देखने को एक नया नज़रिया और समझ मिली। मुझे कॉलेज के हर प्रोग्राम का बेसब्री इंतजार रहता था और विशेष रूप से साहित्य संगम के कार्यक्रमों और आयोजनों का। विभाग के आयोजनों में बड़े उत्साह और उमंग के साथ भाग लेता था! क्योंकि मुझे यहां भी बहुत कुछ सीखने को मिलता था कि; इतने बड़े-२ कार्यक्रमों का आयोजन कैसे किया जाए और वो भी इतने सुचारू, सुनियोजित और सफलता के साथ।
चूंकि मुझे घूमना फिरना इतना पसंद है और तरह-२ के कार्यक्रम भी तो ये तो लाजमी ही था कि में कॉलेज के कोई कार्यक्रम नहीं छोड़ता था साथ ही मुझे अन्य कॉलेज के प्रोग्रामों का भी पता चलता और संभव होता तो मैं वहां भी जरूर जाता; ये यादे और अनुभव भी कमाल की हैं, जिसे मैं ताउम्र याद रखूंगा। कभी न भूल सकने वाली यादों में तो कॉलेज का वार्षिक टूर भी हुआ करता था! सच में इस दिन सभी बहुत खुश और जोश, उमंग से भरे रहते थे; बच्चो से लेकर टीचर्स सभी इस दिन सब किताबे भुला कर बस साथ मिलकर हस्ते, खेलते, नाचते, गाते, घूमते और खाते थे ' जैसे कोई गुरु न हो और न कोई विद्यार्थी सब बस दोस्त बन जाया करते थे। हम सब पूरे रास्ते बस में खूब नाचते गाते और मस्ती मजा करते जाते थे, सब दुख , चिंता भुला कर। सच कभी भुलाए भी नहीं भूल सकूंगा मैं ये दिन भी।
मैं बहुत ज़िंदा दिल हूं और इसलिए जीता भी इसी ढंग से हूं; जीवन के जितने भी पल मिलते है खुल कर जीने को तो मैं उसे बेवजह के बहाने करके गवाता नहीं !बल्कि और बिंदास तरीके से और दोनों बहो को खोलकर जीता हूं। अब तो मुझे और भी ज्यादा अहमियत पता चल गई है इन सब कि खास कर आज़ादी कि और ज़िन्दगी कि! क्योंकि ये सब तो बस अब यादों में ही रहेंगे और जिसे में याद करके खुश होता रहूंगा

और मन में एक तसल्ली रहेगी कि मुझे इतना ही सही मगर ये सब अनुभव करने का सौभाग्य तो मिला। अब पता नहीं कब फिर ऐसा दौर फिर लौटेगा? मैं तो इस साल निकल जाऊंगा कॉलेज से मगर मैं ये दिल से चाहता हूं कि जैसा इन डेढ़ सालों का ऑफलाइन अनुभव रहा वो मेरे बाद के भी मेरे जूनियर्स को जरूर मिले ; मगर ऐसा लगता नहीं क्योंकि अब तो सब ऑनलाइन है! क्लास से लेकर प्रोग्राम, कार्यक्रम और एग्जाम भी। खैर! अनुभव तो अनुभव ही होता है और हर परिस्थिति हम कुछ न कुछ जरूर सिखाती है। मैने निजी तौर और इस ऑनलाइन और कारोना से काफी कुछ सीखा ; आपने, घर-परिवार, आज़ादी, ऑफलाइन पढ़ाई इन सब की अहमियत तो पता चली ही साथ की अब कहीं न कहीं मैने काफी हाद तक खुद पर काबू करना भी सीख लिया है।

अब कभी जब मैं खुद को देखता हूं तो ये देखकर हैरान होता हूं कि कैसे मैं डेढ़ साल रह गया बिना घूमे-फिरे और इतना मौज- मस्ती किए बिना! मगर हा मैने अब खुद के मन को काबू में करना सीख लिया है और जितनी क्लासो को छोड़ दिया था कार्यक्रमों के चक्कर में, उन्हें न ले पाने का भी आज अफसोस होता है । मगर अब चाहे जो भी हो एक सच तो ये भी है कि अगर ये दौर न आता तो मुझे इतनी समझ , इन सब की इतनी कद्र भी न हो पाती और न मैं अपने चंचल मन पर नियंत्रण करना सीख पाता।
अब आज २०२१ विदाई समारोह के रूप में मेरा ये अंतिम कार्यक्रम का अनुभव होगा; ऑनलाइन ही सही मगर सभी फिर एक बार एक साथ होंगे और शायद अंतिम बार भी। फिर भी उम्मीद है कि मेरी तरह सभी इस दिन का भी बेसब्री से इंतजार होगा और उतना ही जोश होगा और खुशी भी जितना ऑफलाइन में। मैने अपने स्वागत समारोह (२९१८) में मिस्टर फ्रेशर में भाग लिया था ,जीता नहीं वो अलग बात है मगर ये भी १००% सच है कि सीखा तो उस दिन भी और वैसे भी कहते है न कि जीतने से ज्यादा सीखना जरूरी है हालांकि ये सच नहीं है आज के संदर्भ में ! अब आप सीखे या न सीखे मगर जीत गए तो सब आपका" खैर उस दिन खूब मज़े भी किए। मिस्टर फेरवल में तो नाम नहीं दे रहा ,मगर हा! मुझे यहां भी बहुत कुछ सीखने और बहुत कुछ नया अंदाज़ देखने को भी मिलेगा।

अविस्मरणीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

मोहिनी

मेरे जीवन में 13 नवंबर 2019 का दिन हमेशा बहुमूल्य व यादगार रहेगा। इस दिन हिंदी विभाग की साहित्य संगम कार्यकारिणी की ओर से दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। हिंदी विभाग के प्रत्येक सदस्य अत्यंत हर्ष में थे तथा इस दिन के लिए बेसब्री से इंतज़ार भी कर रहे थे। चूंकि एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी थी तो इसका आयोजन भी उसी भव्यता के साथ सुनियोजित ढंग से किया जाना भी हमारा कर्तव्य था।

इस दिन के लिए हिंदी विभाग के प्रत्येक सदस्य कई हफ्तों से तैयारियों में लगे थे। हमारा पूर्ण हिंदी परिवार अर्थात् प्रथम वर्ष के प्रत्येक विद्यार्थी से लेकर हिंदी विभाग के गुरुजन यहां तक कि विभागाध्यक्ष तक भी जुड़े हुयेए थे और इन्हीं अथक हफ्तों के परिश्रम का फल देने वाला दिन था ; संगोष्ठी का दिन 13 नवंबर 2019. राहुल भैया,आशा दीदी, दिव्या दीदी ,अजय भैया ,उदय भैया इनके अतिरिक्त प्रथम वर्ष से संगीता, अभय और अन्य भी कई विद्यार्थी थे और साथ ही मेरे सहपाठी शाश्वत भाई, शुभम भाई और काजल भी थे ही; हम हफ्तों पहले से पूरे कार्यक्रम व साज–सज्जा की नीति बनाने के साथ ही खुद अपने हाथों से सजावट के लिए रंग– बिरंगे कागज़ों से तरह–तरह के फूल व अन्य सजावट सामग्री बनाना शुरू कर दिया था।

इसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका हमारे बीते तृतीय वर्ष की छात्रा सरिता दीदी की रही थी। इसके साथ ही अध्यापकों से खुले दिल का सहयोग व परामर्श मिला।

हमने न केवल कार्यक्रम स्थल अपितु सभागार को भी नई–नवेली दुल्हन कि तरह सजाया बल्कि पूरे महाविद्यालय को भी।

महाविद्यालय के प्रवेश द्वार से लेकर सभागार तक के पूरे मार्ग को

सज्जित किया वो भी "**waste out of best**" से भी; इससे हमारा कुछ खर्च तो कम हुआ ही साथ ही मुझे निजी तौर पर ये सीख भी मिली की कैसे मैं अपने जीवन में या अन्य कार्यक्रमों के आयोजन में भी इन्हीं तरीकों को अपना सकती हूं और साथ ही इतने बड़े पैमाने पर किस प्रकार से एक सफल और सुनियोजित व्यवस्था की जाए इसकी सीख भी मिली।

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में न केवल हमारे कॉलेज के ही शिक्षकों या विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया बल्कि दिल्ली विश्वविद्यालय व अन्य विश्वविद्यालयों के भी शिक्षक गणों, शोधार्थियों व विद्यार्थियों ने भी प्रतिभाग लिया।

आयोजन का विषय था बांग्ला के महान साहित्यकार व भारतीय राष्ट्रगान के निर्माता तथा गीतांजलि के रचियता श्री रवींद्रनाथ टैगोर और हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर और ऐतिहासिक विषयों के नाटककार जयशंकर प्रसाद। प्रसाद जी की कालजयी रचना कामायनी व टैगोर जी की गीतांजलि के मूल्यों व आज के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता से सभी प्रतिभागियों को अवगत करवाना। अतः इस गंभीर व अत्यंत साहित्यिक महत्वपूर्ण विषय को स्पष्ट करने हेतु वक्ताओं के रूप में माननीय डॉ करुणाशंकर उपाध्याय तथा डॉ भरत सिंह जी को आमंत्रित किया गया था।

साथ ही अन्य माननीय वक्ताओं को भी आमंत्रित किया गया था। डॉ करुणाशंकर उपाध्याय जी ने हमेशा की ही तरह अपने वक्तव्य व ज्ञान से सभागार में उपस्थित सभी श्रोताओं के साथ अन्य वक्ताओं का भी मन मोह लिया।

साथ ही इसी कड़ी में हमारे विभाग के श्री वीरेंद्र भारद्वाज सर, रुचिरा ढींगरा मैम और डॉ सर्वेश कुमार दुबे सर ने भी अपने विचार प्रस्तुत विषय के संबंध में रखे।

अब यदि उस दिन का मैं विस्तार से बखान करने बैठूं तो शायद पूरी मैग्जीन ही तैयार हो जाए। लेकिन फिर भी उस दिन के कुछ खास और अनमोल क्षणों का वर्णन ज़रूर करना चाहूंगी। वैसे तो, वो पूरा दिन ही बहुत खास था और कॉलेज के ये तीन वर्ष भी। परंतु उस दिन जो एक

खास बात रही थी और वो ये थी कि हमने बहुत ही मेहनत करके व अपने गुरुजनों विशेषतौर पर डॉ कंचन मैम और डॉ प्रवीण भारद्वाज मैम के मार्गदर्शन व सहयोग से फ़ोटोशूट का क्षेत्र भी तैयार किया गया था और हम सबका 100% सफल रहा क्योंकि न केवल इसकी तारीफ़ ही की गई बल्कि सबको इतना पसंद आया की जो समय भोजन के लिए दिया गया था; उसमें से ज्यादातर फ़ोटो शूट करवा रहें थे। हालांकि हमारी ओर से ही सभी अतिथि, सहभागियों, प्रतिभागियों सभी के लिए पौष्टिक, स्वादिष्ट व रुचिकर भोजन की व्यवस्था भी की गई थी।

सभी के साथ मैंने तो ढेरों फ़ोटो खिंचवाई थी और एक तस्वीर तो बेहद ही ख़ास रही जिसमें हमारे माननीय वक्ता, हमारे विभाग के अध्यापक गण कार्यक्रम को सफल बनाने वाले मेरे साथी भी थे।

सामूहिक तस्वीर इसीलिए भी खास थी क्योंकि ये अमर उजाला अख़बार में भी छपी थी और मुंबई के एक अख़बार में भी छपी थी सच में ये सब देखकर मुझे बहूत खुशी हुई और स्वयं पर बहुत गर्व हुआ। एक बात और जिसने मुझे बहुत हर्ष महसूस करवाया वो था दीप प्रज्ज्वलन। दीप प्रज्जवलन के समय मंच पर एक दीप मुझसे और सरिता दीदी से प्रज्वलित करवाया गया। ये क्षण मेरे लिए सबसे खास रहा था तथा ये अनुभव भी मेरे जीवन का पहला अनुभव था। सच में मैं न तो ये सब भूल सकूंगी और न ही वो प्रेम,सम्मान और ज्ञान जो मुझे मेरे प्यारे व आदरणीय गुरुजनों से व साथियों से मिला।

सब कुछ बहुत अच्छे से हुआ और हमारे इस अथक व एक साथ मिलकर किए गए प्रयास, व्यवस्था, आयोजन का अंततः परिणाम एक सफल सुनियोजित,सुंदर, ज्ञानदय व सार्थक कार्यक्रम के रूप में संपन्न हुआ।इसके सफल आयोजन व इसे अविस्मरणीय बनाने में सभी का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से योगदान रहा।

मैं हमेशा ऋणी रहूंगी सभी का अपने गुरुजनों का , वक्ताओं का व साथियों का की मुझे इस बहुमूल्य कार्यक्रम का हिस्सा बनने का मौका दिया और सहयोग भी दिया। लोग सही कहते हैं की "ज़िंदगी वो संगीत है जो हर रोज़ एक नई सरगम सिखाती है ,एक नई लय में आपको बांधती है।"

मेरी अभिव्यक्ति

काजल

उत्साह, उमंग और जिज्ञासा के साथ आई!
अब विदाई है तो आंखें भर आई।
इन तीन सालों में बीता हुआ
हर एक पल याद आने लगा!
आंखों के सामने एक मधुर
छवि-सा छाने लगा।
मेरे गुरूजनो के व्यक्तित्व से
जुड़ा खास अंदाज भी मन में
आने लगा ;
"रुचिरा मैम का बिंदास मिजाज!
और विरेन्द्र सर का दरियादिल अंदाज।

विकास सर का राजनीतिक मुद्दों पर भी बतियाना और बच्चों की समस्या के लिए आवाज़ उठाना ,प्रवीन मैम का होले-३ समझाना।
बृज भाषा और कृष्ण वर्णन में कल्पना मैम का रण जाना , कंचन मैम का विस्तार से लिखवाना और प्यार से समझाना।
अरविंदर मैम का ओके, ठीक है कहना और बेटा कहकर बुलाना , सरिता मैम का भविष्य के लिए जगाना।
दर्शन सर का हंसमुख स्वभाव के साथ बड़े ही रूचि - आनंद के साथ पढ़ाना , काम न पाने पर तरूण सर का खीझ जाना और फिर अपने स्वभावानुसार बड़े ही प्यार से ज्ञान का महत्व बताना।
अशोक सर के चेहरे पर गंभीर भाव परंतु मंद-२ मुस्काना , राजकुमारी मैम की केवल दो क्लासों में ही मुझमें नारी सशक्तिकरण का भाव जग जाना।
सरला मैम का बोर्ड पर लिखा कर पढ़ाना और स्कूल की याद दिलाना , सात समुंदर पार होकर भी ज्योति मैम का विभाग के कार्यक्रमों से जुड़ जाना और प्यारी सी मुस्कान के साथ हम पर अपना स्नेह लुटाना।
दुबे सर का भारतीय और पाश्चात्य साहित्य में गजब का तालमेल

बिठाना, अरस्तू के अनुकरण सिद्धांत को रामचरितमानस से समझाना और शुभम के क्लास में न होते हुए भी उसी का नाम बुलाना। "कभी न भूल सकूंगी ये खट्टे- मीठे पल ! ये प्यार, सम्मान और ज्ञान; जिससे बढ़ा मेरा भी मान और जागा स्वाभिमान।
जीवन जीने का सही राह दिखाया ! सही ग़लत के अंतर को समझाया। जीवन अनेक अनुभवों से भरा! 'जीना भी एक कला' ये सीख भी मिला। ताउम्र रहूंगी आभारी दिया जो ये अनमोल ज्ञान - स्नेह!चाहें रहूं कहीं भी,मगर कभी न छूटेगा आपसे मेरा ये नेह।

38.

गंवार

चंदन पाल

दिल्ली ! देश की राजधानी; जिसके विषय में प्रचलित वाक्य है "दिल्ली है दिलवालो की"। ये दिलवालो का शहर है! पता नहीं कितनों को आकर्षित करता है। अपनी आंखों में आशाएं और उम्मीदों की पोटली लिएं; यहां आने वाले अनगिनत लोगों में से इसने कितनों को गले लगाया, कितनों को सिर पर बिठाया और न जाने कितनों को निगल गया' ये बात तो ये शहर ही जाने।

जुलाई 2018 दिल्ली शहर में कहीं...दिल्ली विश्वविद्यालय के एक कॉलेज के हिंदी विभाग में दाखिला की प्रक्रिया समाप्त हुई। इस विभाग में आने जाने वाले;सभी की अपनी-२ अलग-२ कहानी है।कुछ का तो उपन्यास तक है। यहां आने वालों के साथ कुछ अपेक्षाएं और कुछ ख्वाहिशें भी आईं थीं।ये ख्वाहिशें और ये अपेक्षाएं केवल दिल्ली शहर की ही बात नहीं थी! बल्कि ,इनमें कुछ ने देश के सुंदर गावं,देहात से सफर तय किया था।

ख्वाहिशें...
ख्वाहिशें! महज़ ख्वाहिशें नहीं हैं,
ये मुकम्मल ज़िंदगियां है।
हिंदी विभाग में दाखिला लेने वालों का दो प्रकार था; एक जिनका इसी में दाखिला लेना उद्देश्य था! ये सबसे सुखी और प्रसन्न लोगों में से थे। दूसरे वे लोग थे जिनकी ज़िन्दगी ने उन्हें लताड़ा था या कहें उन्हें उनकी आकाक्षाओं ने पटक-२ कर धोया था,जो कहीं न कहीं असफल होकर आए थे। फिर प्रतिशत को मर पड़ी तो बस कैसे भी करके दाखिला मिला! इस दूसरे प्रकार को कठिन दू:ख था।

प्रथम सत्र शुरू हुआ ,सभी का एक फ्रेंड सर्कल बन गया।सर्कल में 'आप' से औपचारिकता शुरू हो कर 'तू' के व्यवहारिकता तक पहुंच गई।तू तक के सफर के बाद अभिवादन 'बैन्चो'शब्द से होने लगा। इसे आप गाली मत समझिएगा! ये युवाओं के बीच का प्यार है। दिल्ली का रंग चढ़ जाने के

बाद दोस्त लोग एक ज़ोन में पहुंचते है; जिसे बेस्टफ्रेंड जोन कहते है। तब यह शब्द प्रकाश में आता है।ये शहर के लोगो कि लिए आम बात है ,पर उनके लिए नहीं जिन्हें हमने गंवार शब्द से संबोधित किया। जो मिलो दूर देहात या गांव से आए थे।
हम गंवार से संबोधित करते भी क्यों न? सभ्यता की परिचायक विकासशीलता जो ठहरी।जो जितना विकसित है वह उतना ही सभ्य है या कहे कि को जितना सभ्य है उतना ही विकसित है।

हमने लोगो को जांचने परखने का पैमाना भी क्या रखा!पहनावा,भाषा? और रखते भी क्या? खैर! यहां कुछ टेक्निकल और कुछ अनटेक्निकल गलियों से भी परिचय हुआ।आपको इस बात से भी परिचय कराने में गर्व महसूस कर रहा हूं कि मजाल है लड़कियां पीछे रह जाएं। जेंडर डिस्क्रिमिनेशन का कोई स्थान नहीं है यहां।एक बार मेरा सीनियर (लड़की) से साक्षात्कार हुआ; चाय कि टोपली पर।एक हाथ में सिगरेट,एक हाथ में चाय का गिलास। आहा! भारतीय परंपरा के पालथी मुद्रा में मुंह से गालियों का प्रवाह। माशा अल्लाह! ऐसा लग रहा था कि जैसे शिव की जटाओं से निकल कर गंगा मईया बंगाल की धरती को तृप्त करने के लिए निकलीं हों। वाह! रे!

मेरे ज़हन में ये बात आई कि हिंदी विशेष, हिंदी साहित्य का विद्यार्थी जिसने तुलसी का रामचरितमानस पढ़ा तथा पढ़ाते वक्त शिक्षक द्वारा भी राम और सीता के माध्यम से हमें मर्यादा,त्याग आदि का ज्ञान दिया गया होगा ताकि हमारे चरित्र में भी इन मूल्यों का निर्माण हो सके; फिर उसे पढ़ने वाले का ये रूप?वो भी छात्रा का? खैर!ऐसा क्यों 'मैं इस ओर नहीं जा रहा।

इन्हीं में से कुछ वीर योद्धा ऐसे भी थे जो लड़का लड़की के संबंध के चरम पर पहुंच कर रहस्य को जानने में कायम भी हुए; जिन्हें आज हम मॉर्डन बुद्ध भी कहते हैं।
जब ये लड़का लड़की दोनों के साथ हुआ...
"तुम मुझे बहुत अच्छे/अच्छी लगते/लगती हो। यार! आई लाइक यू बट; इज़ अ फ्रेंड।"
तो! बुद्ध को तो ज्ञान की प्राप्ति बोधगया में हुई मगर; इन्हें यहां।

हमारे जैसे बाहर से आने वालों को दिल्ली ने बहुत कुछ सिखाया और

यहां के परिवेश ने भी सिखाया कि विन्रम रहो,संघर्ष करो।

हम उनमें से हैं जो अपना स्वर्ग ,अपनी कोठी छोड़ यहां मुर्गी के दर्बे में बंद होकर जीवन के रहस्य को समझने का प्रयास कर रहे हैं।

यहां के दोस्तों ने यह सिखाया कि एक ही जीन्स बिना धोएं डेढ़ महीने पहनी जा सकती है। जब तक कुकर में चाय और कड़ाही में चावल न बनने लगे तब तक आप सीरियस स्टुडेंट ही नहीं कहें जा सकते।

दुनिया भले ही चांद पर पहुंच गई हो ; कोइड स्कूल से आए लोगों को डेवलेपमेंट तब दिखी जब कॉलेज में किसी लड़की ने 'हाय' किया।

इसी बीच असाइनमेंट्स, टेस्ट और पेपर का सफरनामा भी चलता रहा। देश में एक ऐसी फरवरी आईं जो अपने साथ महामारी को ले आई जिसने पूरी व्यवस्था को अव्यवस्थित करने में कोई कसर नहीं रखी। साल बीत गया; कॉलेज बंदी आज भी है और हम विदा होने कि दहलीज पर खड़े हैं।

फैकेल्टी के विषय में बात करें तो;
"प्रिय शिक्षक गण! हिंदी विभाग,
मैं अध्यापक ओर अध्यापिका सभी की बात कर रहा हूं; आप ज्ञान का भंडार हैं,सभी अत्यन्त बुद्धिमान और इस बुद्धिमता को संचालित करने का आपका विवेक और विनम्र स्वभाव!आओ सभी को बेहतरीन शिक्षकों में शुमार करता है।"आप सभी बहुत प्यारे हैं आपने हमे ऐसे पढ़ाया जैसे हमारा कभी पढ़ाई का मन न होते हुए भी बातों ही बातों में कुछ न कुछ सीखा ही दिया। जिस तरह मां बचपन में लड्डू के बीच में दवाई रख कर खिला दिया करती थी और हमें पता भी नहीं चलता था।

हम सभी ने सभी से बहुत कुछ सीखा, पर! इस शहर ने को सिखाया हम देहातियों से उसकी वसूली भी कि; पहले "जी" बोलते थे वो अब "यस" और "या" हो गया है।

पहले फोन रखते हुए बोलते थे "चरण स्पर्श मां!ध्यान रखल करा आपन।"अब बोलते हैं" लव यू मां! बाय।"

इस सूक्ष्मता से जो दिल्ली ने हम बदला उसका पता तो तब चला जब साल बाद घर जाने पर:- "गांव वाला ड्राइवर चाचा पूछ लेहलन कि - बेटा कहां उतरना है?"खेत में पिता का हाथ बटाने वाला बेटा! जिसका शरीर मिट्टी से सन जाए तो चिन्ता नहीं।जिसके लिए कीचड़ में उतरना संकोच का विषय हो ही नहीं सकता; आज उसे किसान पिता ने ये कहकर खेत में उतने से मना कर दिया कि - "रहेदा! सूखे रहा। गन्दा हो जाइवा।“

आज इस देहाती को ज्ञात हो गया कि वह देहाती से अब शहरी हो गया है और साथ ही ये भी ज्ञान हुआ कि देहाती जरूर थे पर गवार नहीं।

इस सभी अनुभावों को समेटू तो कहूंगा कि "हमने स्कूल की अनुशासन की चार दिवारी को फांदकर ख्वाहिशों और उम्मीदों के पंखों के सहारे कॉलेज के आंगन में प्रवेश किया।फिर तमाम असिग्मेंट्स टेस्ट के गलियारों से गुजरते हुए,परीक्षा,दोस्ती और रिश्तों के उतार चढ़ाव को देखते हुए आज विदा होने कि दहलीज और हैं...।
जिन्होंनें मुझे सिखाया,मेरा मार्गदर्शन किया उन सभी के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूं।
आज मैं यह लिखते हुए भावुक जरूर हूं पर साथ ही इच्छाशक्ति और असीम ऊर्जा से खुद को भरा महसूस कर रहा हूं और आगे आने वाली चुनौतियों के लिए भी तैयार हूं।

जब यहां आए थे तो यहां सब कुछ पराया और अनजान था पर आज ऐसा लग रहा है जैसे हमारा अपना हमसे छूटने वाला है। अब सभी साथी छूट जाएंगे! भविष्य में कभी किसी मोड़ पर मिलें शायद....!
विदा लेते हुए कहूंगा :-
" खुले आसमां के बेखौफ परिंदों!
सकल जहां है घर तुम्हारा।
ये धरा तुम्हारी !
ये जहां तुम्हारा।

"साथियों! जीवन के इस संघर्ष में झंडे भले नहीं गड़ेंगे,पर अपनी उपस्थिति जरूर दर्ज करेंगे।
अनुभव?
तब! अनुशासन में थे,
अब! स्वत: अनुशासित है।
अब इसी के साथ खत्म करता हूं।बहुत ज्ञान लिया।

ज़िन्दगी एक मैदान है! मेरे दोस्त,
खड़ा हो सकता है तो चल,
चल सकता है तो दौड़,
दौड़ सकता है तो छलांग लगा,
छलांग लगा सकता है तो उड़...
जय भवानी!

मज़ेदार था यार वो कॉलेज का सफर

आकाश ठाकुर

पाठशाला का वो दौर.... स्कूल यूनिफॉर्म से लेकर जूते भी एकदम चकाचक रखते हुए फिर आया खुले मैदान में, खुले विचारों में,लहराते झूमते गातें हुए वो दिन.... ख्वाबों में देख रहे थें अपने मस्ती,शरारतो वाले वो पल!
और आखिर आ ही गया वह दिन पहला दिन हम इतने उत्सुक हाय_घर से बड़ो की नसीहतें..... "ज्यादा खें खें मत करबे सीधा अपन कक्षा म जाबे अउ फिर घर के रद्दा।"
पता नही और क्या क्या! पर ये सब सुनता कौन था।

जैसे ही कॉलेज गेट पर पहुँचा मेरे कानो में गाने बजने लगें-"चले जैसे हवाये सनन सनन उड़े जैसें परिंदे गगन गगन"। और इत्ते में सामने से लड़के लड़कियों का झुंड मेरी ओर बढ़ता हुआ, पास आये नाम पूछा और निकल लिए,और हम सहमे सहमे से एक नन्ही सी जान की तरह।
क्लास रूम ढूंढने में थोड़ी बहुत दिक्कत हुई, हर विषयों के लिए अलग अलग रूम होते है जानकर आश्चर्य हुआ ।
एक ही बेंच पर लड़के लड़की को बैठने की छूट भी थोड़ी असहज महसूस किया।
सीनियर स्टूडेंट को कॉलेज के बाहर सिगरेट पीते हुए देख बहुत अजीब लगा।
हां.. रैगिंग से बचा....कोई न,हुआ नही मेरे साथ।
सब नया-नया सा लग रहा थी बिल्कुल वैसा जैसा सब कहते थे, वो पल याद है क्या?
जब पहली बार क्लास में जाकर बैठा था एक मुस्कान थी चेहरे पे। वह जो फर्स्ट ईयर वाला ग्लोव था।
तब तो बिल्कुल खूबसूरत बनके जाते थे
मालूम नहीं था कि यह मुँह भी वक्त के साथ कम हो जाएगा।
बस कुछ दिन की बात थी फिर तो दोस्त भी अपने जैसे मिल गये।

चंदन,शुभम,शाश्वत, ऋग्वेद,और अन्य।
थोड़े दिन घबराहट के बाद इस माहौल में हम सभी घुल मिल गए।
टाइम से कालेज भी पहुंच गए तो क्लास में देर से ही पहुँचना होता था। 10:00 बजे की क्लास में 10:30 तक पहुंच जाते थे।
कोई यार अपना अटेंडेंस लगवा देता था, अगर नहीं जा पाते थे। क्लास को छोड़कर कहीं भी घूमे चाहे कहीं पर बैठे हैं। "C" point ही तो अड्डा होता था। 10 मिनट के अंदर तैयार होने का जादू यहां से सीखा,
सीखा अटेंडेंस के लिए मेडिकल के जुगाड़ का एक से एक तरीका।रात तो असाइनमेंट व टेस्ट की तैयारी में कटती थी
एग्जाम से एक रात पहले ही तो अपनी सारी किताबें निकलती थी।
क्लास में एक ही लोग ही पानी की बोतल लाते थे वही बोतल पूरी क्लास में घूमती रहती थी उन भगवानों में मैं भी था जो सब की प्यास बुझाता था।
प्रेजेंटेशन देते समय क्लास के सामने कितनी हालत खराब होती थी टॉपिक के बारे में समझाने से ज्यादा तो स्टैंड अप कॉमेडी लगती थी।
कैंपस में घूमते घूमते थकते कहां थे
हम लाइब्रेरी में तो नजारे देखने जाते थे
बात बात में तो कॉलेज में फेस्ट होने लगते थे उसके बीच में इंटरनल के टेस्ट होने लगते थे।
असाइनमेंट भी अपना अंतिम दिन ही जमा होता था, डरने की क्या जरूरत थी quiz कंपटीशन थोड़ी ना होता था।
रोज कॉलेज को बुरा भला कहा...बनता भी था इतना जुल्म जो सहा।
आधी से ज्यादा कॉलेज लाइफ तो मेट्रो में कट गई।
बाहर कॉलेज के हैप्पी ठेले को उधारी वापस कहां की।
75 % अटेंडेंस सच में बहुत तंग करती थी इसी नियम ने जिंदगी एक दम बेरंग कर रखी थी।
फिर धीरे धीरे पता ही नहीं चला लॉकडाउन वाली आखरी साल आ गई.... वक्त कितनी जल्दी निकल जाता है ना? अभी यहां आए थे और अभी जाना पड़ रहा है।फिर कंपटीशन की दौड़ में सब छूटने लग गया...अब क्लासेस कम होने लगी तो कॉलेज आना भी कम हो गया।
लग रहा था कि जिम्मेदारियों का बोझ सर पर आने लगा है बेफिकर जिंदगी जीने का समय अब आंखों के सामने से जाने लगा है

अभी तो यह कॉलेज अपना लगने लगा था अभी इसे छोड़कर जाना पढ़ रहा था लग रहा था अब इसके बाद क्या... होगा।
इन क** दोस्तों से कभी दोबारा मिलना होगासब इधर-उधर हो जाएगे शायद कुछ रह भी जाएंगे पर
ऐसा बिल्कुल ऐसा मोमेंट वापस कहां बना पाएंगे
अपनी कॉलेज की कितनी बेइज़्ज़ती करते थे
आज उसी कॉलेज की याद आती है क्योंकि जब उस रास्ते से गुजरते हैं ना तो पूरी कॉलेज लाइफ के जी ली जाती है।
हम हमेशा से चाहते थे कि जल्दी से यहां से निकल जाएं...अब ख्वाहिश करते हैं कि फिर से वह पल लौट आए। वह दोस्तों के साथ पी हुई चाय याद आती हैवह उस दिल्ली की ठंडी हवाएं बार-बार याद आती है
वह कॉलेज की लड़कियों की अदाएं याद आती है
वह कॉलेज के एग्जाम से पहले की दुआएं याद आती हैं।।कॉलेज कभी सपना सा था फिर अपना हुआ फिर पराया हो गया।
आई लव यू से ज्यादा अटेंडेंस लग गई.....सुनकर मन खुशनुमा या हो गया।आए थे यहां से अनजान बनकर,
गए यहां से याद लेकर
जब देखा पन्ने पलट कर
मजेदार था यार वह कॉलेज का सफर।

(छत्तीसगढ़ वाले)

समुच्चय :- 2020-21

आकाश ठाकुर
राहुल
प्रीति सिंह
शाश्वत मिश्रा
शुभम सिंह
महक
ऋग्वेद पांडेय
आयुष दुबे
मानसी
आरती
मोहिनी
अमित कुमार
नितिन कुमार
दीपक कुमार
अंकुश
अनिल
अजय
पवन पाल
खुशबू
शुभम दलाल
याशिका शौकीन
दीपांकर बाबू
सौरभ सिंह
हेमपुष्पा
अमान अली
काजल
सोनी
हेमपुष्पा
अमान अली
काजल
सोनी
दीपक जायसवाल
कोमल रॉय
दीपू कुमार
अंजली
सुमन
यशस्वी राय
मोनिका
सुमित कुमार
सुजीत
अजली
निशा
आशु
शिवांश यादव
विशाल कुमार सिंह
यश वर्मा
चंदन पाल
शिवम
रोहन
कुलदीप सिंह बघेल
विनायक सिंह तोमर

WELCOME

Shot on vivo Z1x
Vivo AI camera
2020.02.27 21:29